₹5/

ग्लोबल ऑब्ज़र्वर

मतलब निर्भीक और निष्पक्ष

इस छोर से उस छोर तक

RNI NO. DELHIN/2016/71079

राष्ट्रीय साप्ताहिक

वर्ष : 09, अंक : 19

02-08 जून, 2025

पद्मश्री डॉ रामदरश मिश्र को आचार्य 'हाशमी' स्मृति पुरस्कार

ग्लोबल ऑब्ज़र्वर

मतलब निर्भीक और निष्पक्ष

इस छोर से उस छोर तक

RNI NO. DELHIN/2016/71079

पढ़ें

और

पढ़ाएं

एक शुभचिंतक. दिल्ली

अब ऊबर ऐप से मेट्रो टिकट

ओएनडीसी से पावर्ड
अगला कदम बी2बी लॉजिस्टिक्स
दिल्ली मेट्रो की टिकट ऊबर पर हुई लाईव
तीन और शहरों में यह सुविधा होगी उपलब्ध

ऊबर ने 19 मई, 2025 को ऊबर ऐप पर मेट्रो टिकट्स रोलआउट करने की घोषणा की। यह ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ओएनड-ीसी) से पावर्ड है। दिल्ली शहर में सबसे पहले इस सुविधा की शुरूआत की गई, जिसके चलते दिल्ली मेट्रो की टिकट्स ऊबर पर लाईव हो चुकी हैं। यह भारत के अग्रणी डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ ऊबर का पहला एकीकरण है, जो सार्वजनिक परिवहन को अधिक कनेक्टेड बनाने की दिशा में बड़ा कदम है। 2025 में देश के तीन और शहरों में यह सर्विस लाईव हो जाएगी।

लॉन्च के अवसर पर प्रवीण नेपल्ली नागा, चीफ टेक्नोलॉजी ऑफिसर, ऊबर ने कहा, 'भारत ने ओएनडीसी जैसे डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से टेक्नोलॉजी को प्रोत्साहित करने में प्रभावशाली कदम बढ़ाए हैं। ऊबर ऐप पर मेट्रो टिकटिंग की शुरूआत करते हुए हमें बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है, इस घोषणा के साथ हम परिवहन संबंधी सभी जरूरतों के लिए वन-स्टॉप शॉप बनने के अपने दृष्टिकोण के और करीब आ गए हैं। ओएनडीसी के साथ काम करते हुए हमने इस बात को समझा कि किस तरह प्राइवेट इनोवेशन और पब्लिक प्लेटफॉर्म्स एक साथ मिलकर स्मार्ट और सहज समाधान ला सकते हैं। यह इसी दिशा में हमारी शुरूआत है।'

विभोर जैन, एक्टिंग सीईओ एवं सीओओ, ओएनडीसी ने कहा, 'ऊबर का ओएनडीसी नेटवर्क के साथ जुड़ना भारत में भरोसेमंद एवं इंटरोपेरेबल डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर के विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। एक ग्लोबल प्लेटफॉर्म के रूप में ऊबर पर मेट्रो टिकटिंग और लॉजिस्टिक्स के एकीकरण से संभावनाओं के नए मार्ग प्रशस्त होंगे। यह साझेदारी भावी इनोवेशन्स की बुनियाद है, जो यूजर्स, पार्टनर्स को बेहतर सेवाएं प्रदान कर परिवहन एवं सेवाओं का दायरा बढ़ाने में मदद करेगी।'

दिल्ली मेट्रो टिकट को अपने ऐप पर लाकर ऊबर टू-व्हीलर, ऑटो, कार एवं बस के बाद अपनी मल्टीमॉडल पेशकश को सशक्त बनाना जारी रखे हुए हैं। अब राइडरों के लिए यात्रा की योजना बनाना और यात्रा को एक ही ऐप के जरिए पूरा करना बेहद आसान हो जाएगा।

इसी क्रम में ऊबर ओएनडीसी नेटवर्क के जरिए जल्द ही बी2बी लॉजिस्टिक्स का लॉन्च भी करेगी। इस समाधान से कारोबार ऊबर के डिलीवरी नेटवर्क के जरिए ऑन डिमांड लॉजिस्टिक्स के लिए रिक्वेस्ट कर सकेंगे और उन्हें अपने खुद के फ्लीट की जरूरत नहीं होगी। इस तरह ऊबर के 1.4 मिलियन ड्राइवर नेटवर्क को कमाई के अतिरिक्त अवसर मिलेंगे। शुरूआत में इस सर्विस के जरिए फूड डिलीवरी की जाएगी, बाद में इसे ई-कॉमर्स, ग्रॉसरी, फामेर्सी एवं हेल्थकेयर लॉजिस्टिक्स में भी विस्तारित किया जाएगा।

रिपोर्ट सैयद असद आजाद

ग्लोबल ऑब्ज़र्वर
मतलब निर्भीक और निष्पक्ष — इस छोर से उस छोर तक
RNI NO. DELHIN/2016/71079

वर्ष : 09, अंक : 19
02-08 जून, 2025

संपादक
ए आर आज़ाद

ब्यूरो प्रमुख
रुफी शमा

बेगूसराय ब्यूरोचीफ
एस आर आज़मी

ब्यूरो ऑफिस बिहार
बजरंगबली कॉलोनी, नहर रोड,
जज साहब के मकान के सामने, फुलवारी शरीफ,
पटना, बिहार-801505

संपादकीय एवं पंजीकृत कार्यालय
81-बी, सैनिक विहार, फेज़-2, मोहन गार्डेन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
Email: doosramat@gmail.com
MOBILE. 9810757843
Whatsapp. 9643709089

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक
ए आर आजाद द्वारा 81-बी, सैनिक विहार, फेज़-2, मोहन गार्डेन, उत्तम नगर, नयी दिल्ली-110059 से प्रकाशित एवं चंद्रशेखर प्रिंटर्स, डब्लू जेड-439, नारायणा विलेज, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित।
संपादक- ए आर आज़ाद
RNI NO.: DELHIN/2016/71079
Declaration No. F.2 (G-9) Press 2016
Contact No. 09643709089, 09810757843
Email:globalobserverindia@gmail.com

समाचार-पत्र में छपे सभी लेख, लेखकों के निजी विचार हैं, इनसे संपादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। समाचार-पत्र में छपे लेखों के प्रति संपादक की जवाबदेही नहीं होगी। सभी विवादों का समाधान दिल्ली की हद में आने वाली सक्षम अदालतों में ही होगा। *उपरोक्त कुछ पद अवैतनिक हैं।*

आवरण 16
पद्मश्री डॉ. रामदरश मिश्र को आचार्य 'हाशमी' स्मृति पुरस्कार- 2025

कारपोरेट 03
अब ऊबर ऐप से मेट्रो टिकट

विचार 18
विश्वसनीयता से जूझती हिंदी पत्रकारिता

मीमांसा 08
लाडली बहन पॉलिटिक्स

चिंता 26
दामन की प्रतिष्ठा

सिनेमा 24
विलेन वाले किरदारों से दूरी

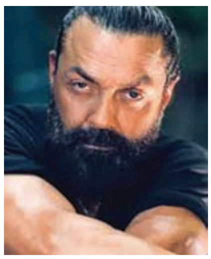

पत्रकारिता का मार्ग और मानक

सरकार को अगर आईना नहीं दिखाया जाए, तो सरकार निरंकुश हो जाती है। और कोई भी निरंकुश सरकार समाज की सेहत और लोककल्याणकारी योजना के लिए सही नहीं होती है। इसलिए सरकार को निरंकुशता से रोकना पत्रकार का राष्ट्रीय धर्म है। और किसी भी देश के नागरिकों को उसके राष्ट्रीय धर्म और राष्ट्रीय कर्तव्य-बोध से कोई रोक नहीं सकता है। सत्ता की आलोचना करना कभी भी राष्ट्रद्रोह नहीं हो सकता है। सत्ता की आलोचना राष्ट्रप्रेम है। इसलिए राष्ट्रहित में सरकार की ज़रूरत भर आलोचना ज़रूर होनी चाहिए। किसी भी हालत में किसी भी सरकार को निरंकुश होने नहीं देना चाहिए।

पत्रकारिता शब्द सुनते ही इसमें पवित्रता की गंध आनी चाहिए। एक ज़माना था कि पत्रकारिता अपने नाम से ही पवित्र थी। इसका आचरण सदगुण संपन्न था। इसके शब्द कारख़ाने से पवित्र होकर निकलते थे। और छपे हुए शब्दों को सच्चाई का द्योतक मान लिया जाता था। लेकिन आज के परिपेक्ष्य में और परिवेश में इसकी सच्चाई धूल गई है। अब पत्रकारिता के दामन पर कई दाग़ लग चुके हैं। और अपने दामन पर लगे दाग़ को पत्रकारिता के ज़्यादातर पोषक 'ये दाग़ अच्छे हैं' कहकर ख़ूब नाम भी कमा रहे हैं। और धन भी बटोर रहे हैं। पत्रकारिता में झूठ का समावेश धन बटोरने या कहें चांदी काटने का एक सुनहरा अवसर मान लिया गया है।

आज की पत्रकारिता में पत्रकारिता कम हो रही है। और पीत पत्रकारिता ज़्यादा। आज ख़बर और विज्ञापन के बीच के अंतर को पूरी तरह मिटा दिया गया है। 'जिसके हाथ में पैसा उसका मीडिया' जैसी कहावत 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' के रूप में चरितार्थ होने लगी है।

इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने जो बेशर्मी का ताज पहना, कुछ काल के बाद उसे प्रिंट ने भी शिरोधार्य कर लिया। नतीजे में मीडिया का चरित्र ही नहीं बदला, राजनीति का भी अंदाज़ बदल गया। नतीजे में समाज के अंदर की समरसता चली गई। समाज अपने ही लोगों के बीच बेनक़ाब होने लगा। समाज बंटने लगा। समाज विषाक्त होने लगा। दरअसल मीडिया समाज का दर्पण होता है, ठीक साहित्य की तरह। और किसी हद तक साहित्य से एक क़दम आगे भी। मीडिया अगर ख़ुद रास्ते से भटक जाए, तो फिर उस समाज को भटकने से कौन रोक सकता है?

मीडिया की नैतिकता अब तेल लेने गई है। अब रीढ़ वाले संपादक भी नहीं के बराबर हैं। जो कुछ हैं भी, तो उन्हें इतना डरा दिया गया है कि वह भी अब कमर झुका कर ही रहते हैं। लेकिन मीडिया का जो राष्ट्रीय धर्म और सामाजिक कर्तव्य है, उसका तेज़ी से लोप हुआ है। इसके लिए मीडिया घराने ही नहीं बल्कि मीडिया कर्मी भी समान दोषी हैं।

मीडिया को अगर बचाना है, तो उसे सरकार के भोंपू होने से बचाना होगा। मीडिया का नैतिक कर्तव्य है- सरकार की आलोचना करना। सरकार की आलोचना करना उसका राष्ट्रीय और पत्रकारीय धर्म है। लेकिन सरकार इस धर्म को निभाने देने में अक्षम है, तो भी मीडिया को अपने वास्तविक गुण से एक क़दम भी पीछे नहीं हटना चाहिए।

सरकार को अगर आईना नहीं दिखाया जाए, तो सरकार निरंकुश हो जाती है। और कोई भी निरंकुश सरकार समाज की सेहत और लोककल्याणकारी योजना के लिए सही नहीं होती है। इसलिए सरकार को निरंकुशता से रोकना पत्रकार का राष्ट्रीय धर्म है। और किसी भी देश के नागरिकों को उसके राष्ट्रीय धर्म और राष्ट्रीय कर्तव्य-बोध से कोई रोक नहीं सकता है। सत्ता की आलोचना करना कभी भी राष्ट्रद्रोह नहीं हो सकता है। सत्ता की आलोचना राष्ट्रप्रेम है। इसलिए राष्ट्रहित में सरकार की ज़रूरत भर आलोचना ज़रूर होनी चाहिए। किसी भी हालत में किसी भी सरकार को निरंकुश होने नहीं देना चाहिए।

॥ ललित गर्ग
स्तंभकार

आत्मनिर्भरता से बढ़ती सैन्य-ताकत

ऑपरेशन सिंदूर की शानदार कामयाबी, पाकिस्तान को करारी चोट पहुंचाने, विश्व को भारत की सैन्य ताकत दिखाने और अपने सैनिकों के अद्भुत पराक्रम के प्रदर्शन की गौरवपूर्ण स्थितियों के बीच एक बड़ी खुशखबरी है कि भारत सरकार ने पांचवीं पीढ़ी के स्वदेशी लड़ाकू विमान (एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट यानी एएमसीए) के प्रोडक्शन मॉडल को मंजूरी देते हुए इस परियोजना पर आगे बढ़ने को हरी झंडी दिखा दी है। निश्चित ही इस फैसले से दुनिया की महाशक्तियां चौंकी है, वहीं यह भारतवासियों के लिये एक नई आशा एवं संभावनाभरी खुशखबरी है। क्योंकि दुनिया की महाशक्ति बनने के लिये सैन्य साजो-सामान की दृष्टि से आत्म निर्भर होना प्रथम प्राथमिकता है। दुनिया पर वर्चस्व स्थापित करने का यह सबसे बड़ा आधार है कि हम सैन्य साजो सामान में स्वावलंबी ही नहीं, निर्यातक बने। क्योंकि उन्हें दूसरे देशों से खरीदने में विदेशी पूंजी का व्यय होने के साथ कई तरह के दबावों का भी सामना करना पड़ता है। दूसरे देश अपनी शर्तों पर ये हमें उपलब्ध कराते हैं, अर्थ का व्यय भी स्वदेशी उत्पादन की तुलना में बहुत ज्यादा करना पड़ता है। जबसे रक्षा सामग्री के निर्माण में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाई गई है, तब से भारत का रक्षा निर्यात तेजी से बढ़ा है। रक्षा मंत्रालय के ताजा फैसले के बाद सरकारी और निजी क्षेत्र की कंपनियों के शेयर जिस तरह उछले, उससे यही पता चलता है कि देश रक्षा क्षेत्र मंक आत्मनिर्भर होने के लिए नई दिशाओं को उद्घाटित कर रहा है।

निश्चित ही पांचवीं पीढ़ी के उन्नत लड़ाकू विमानों का देश में ही निर्माण करने और उसमें निजी क्षेत्र का सहयोग लेने की रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की घोषणा एक ऐसा फैसला है, जो दूरगामी एवं देशहित का सराहनीय कदम है। ऐसे फैसलों में बिना विलम्ब के प्रोत्साहन एवं सहयोग होना चाहिए। हमें निश्चित करना चाहिए कि आधुनिक लड़ाकू विमानों के निर्माण तय समय में हो, इसके लिए हरसंभव उपाय किए जाने चाहिए। ऐसे फैसलों से भारत की ताकत बढ़ती है, दुनिया की अधीनता कमतर होती है। गौरतलब है, अभी तक अमेरिका, रूस और चीन ने ही पांचवीं पीढ़ी के स्वदेशी लड़ाकू विमान बनाने में सफलता हासिल की है। इस योजना के जरिये दुनिया को यह संदेश देना है कि भारत अब पांचवीं पीढ़ी का लड़ाकू विमान खरीदने की बजाय खुद बनाने का काम करेगा। इस स्वदेशी विमान के डिजाइन और विकास के लिए सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति ने हाल ही में पंद्रह हजार करोड़ रुपए की राशि मंजूर की थी। अब रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) की एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एजेंसी (एडीए) इस प्रोजेक्ट का नेतृत्व करेगी और डीआरडीओ के मुखिया की मानें, तो अगले एक दशक में यह लड़ाकू विमान भारतीय वायु सेना के बेड़े का हिस्सा होगा। निस्संदेह, हमारे रक्षा वैज्ञानिकों की सराहना की जानी चाहिए कि उनके अथक परिश्रम, तकनीकी कौशल और मेधा के कारण देश जल्द ही सुरक्षा साजो-सामान के मामले में भी आत्म-निर्भर बन जाएगा। इन स्थितियों के लिये जहां रक्षामंत्री राजनाथ सिंह की सराहना होनी चाहिए।

मौजूदा समय में भारत लड़ाकू विमान के मामले में दूसरे देशों पर निर्भर है। सरकार ने इस दिशा में भी आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए बड़ा कदम उठाया है। इस फैसले से घरेलू एयरोस्पेस इंडस्ट्री को सशक्त बनाने में मदद मिलेगी। एएमसीए का विकास भारतीय वायु सेना की लड़ाकू क्षमताओं को मजबूत करने और देश की रक्षा को बढ़ावा देने में मील का पत्थर साबित होगा। पडोसी देशों की हरकतों, युद्ध की संभावनाओं एवं षडयंत्रों को देखते हुए आने वाले समय में होने वाले युद्ध में वायुसेना की क्षमता और तकनीक को अधिक सशक्त बनाने की अपेक्षा है। भारत हमेशा से एक शांतिकामी मुल्क रहा है, मगर अपनी सरहदों व विशाल आबादी की सुरक्षा के लिए वह दूसरे देशों के हथियारों या सुरक्षा उपकरणों पर पूरी तरह निर्भर नहीं रह सकता। विदेशी लड़ाकू विमानों या हथियारों की खरीद में उनके तकनीकी हस्तांतरण को लेकर कई तरह की पेचीदगियां पेश आती हैं। कई देश उन्नत रक्षा उपकरण तो दे देते हैं, लेकिन उनकी तकनीक नहीं देते या फिर उनके कलपुर्जे देने में देरी करते हैं। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि पर्याप्त संख्या में तेजस लड़ाकू विमान बनाने में इसलिए विलंब हो रहा है, क्योंकि अमेरिका उनके लिए इंजन देने में आनाकानी कर रहा है। इसलिए एचएएल, डीआरडीओ की स्थापना की जरूरत मससूस की गई थी और आज इनके बनाए हथियार न सिर्फ हमारी सैन्य शक्ति का हिस्सा बन रहे हैं, बल्कि इस वजह से हमारा 20 फीसदी से भी

अधिक सैन्य आयात कम हुआ है। आज हम अपने स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस दुनिया को बेचने की स्थिति में हैं।

मौजूदा समय में लड़ाकू विमान के लिए भारत अमेरिका और पश्चिमी देशों और रूस पर निर्भर है। देश में लड़ाकू विमानों की कमी भी है। ऐसे में सरकार स्वदेशी निर्मित आधुनिक लड़ाकू विमान के निर्माण को बढ़ावा देने की दिशा में कदम उठाकर सूझबूझ एवं दूरगामी सोच का परिचय दिया है। आज जब युद्ध के तौर-तरीके बदल रहे हैं, तब भारत को हर तरह की रक्षा सामग्री स्वदेश में ही बनाने में इसलिए सक्षम होना होगा, क्योंकि ऐसा करके ही वह सच्चे अर्थों में महाशक्ति बन सकता है। प्रारंभ में विदेशी कंपनियों का सहयोग लेने में हर्ज नहीं, क्योंकि ऐसा करके ही तेजी के साथ उन्नत रक्षा समाग्री का निर्माण किया जा सकता है। भारत आधुनिक रक्षा उपकरण एवं तकनीक का निर्माण करने में सक्षम है, इसे आपरेशन सिंदूर ने साबित भी कर दिया। हमारे रक्षा उपकरणों और तकनीक ने जिस तरह तुर्किये के ड्रोन की हवा निकालने के साथ चीनी एयर डिफेंस की पोल खोल दी, उसे विश्व भर के रक्षा विशेषज्ञ भी मान रहे हैं। रूस के सहयोग से बनी ब्रह्मोस मिसाइल और स्वदेशी तकनीक पर आधारित आकाश ने सिद्ध किया कि हमारे रक्षा विज्ञानी किसी से कम नहीं। उन्हें भरपूर प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।

भारत की रक्षा सेना दुनिया में सबसे शक्तिशाली और सम्मानित सेनाओं में से एक है, जो अपने आकार, ताकत और उन्नत तकनीक के साथ वैश्विक मंच पर धूम मचा रही है। चाहे सीमाओं पर गश्त करना हो, आसमान की सुरक्षा करनी हो या विशाल हिंद महासागर को सुरक्षित रखना हो, भारत की सेना एक ऐसी ताकत है जिसका लोहा माना जाना चाहिए। भारत का लक्ष्य सिर्फ.वैश्विक सैन्य शक्तियों के साथ बने रहनाभर नहीं है-यह उनके साथ है बल्कि अब उससे आगे भी आना है। किसी भी युद्ध या संघर्ष में वायु सेना की भूमिका निर्णायक हो चली है। हमास-इजरायल जंग हो या रूस-यूक्रेन लड़ाई, इस तथ्य को पूरी दुनिया स्वीकारती है। ऑपरेशन सिंदूर के जरिये हमारी वायु सेना ने भी दिखा दिया है कि किस सटीकता से शत्रुओं के लक्ष्य को मटियामेट करने में वह सक्षम है। ऐसे में भारतीय वायु सेना की जरूरतों पर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। वर्तमान में, भारत दुनिया में चौथे स्थान पर है, जो केवल संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन से पीछे है। यह स्थान इसके उन्नत विमान, बेहतर प्रशिक्षण और रणनीतिक महत्व के संयोजन के कारण अर्जित किया गया है। बहुमुखी राफेल जेट से लेकर शक्तिशाली सुखोई अपने रास्ते में आने वाली किसी भी चुनौती से निपटने के लिए सुसज्जित है। निश्चित ही भारत ने एक ऐसा सैन्य बल बनाया है जो ध्यान आकर्षित करता है, जिसमें विशाल जनशक्ति, अत्याधुनिक तकनीक और गहन रणनीतिक फोकस का संतुलन है। यह अब सिर्फ.एक क्षेत्रीय खिलाड़ी नहीं है; भारत खुद को एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर रहा है। भारतीय वायुसेना के पायलट दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पायलटों में से हैं, जो न केवल हार्डवेयर बल्कि मानवीय तत्व के कारण हवाई प्रभुत्व बनाते हैं। चाहे वह सीमाओं पर खतरों का जवाब देना हो या हवाई श्रेष्ठता सुनिश्चित करना हो, भारत की वायु सेना अपनी रक्षा रणनीति में एक प्रमुख खिलाड़ी है, जो हमेशा आसमान की रक्षा के लिए तैयार रहती है।

(लेखक, पत्रकार व स्तंभकार हैं।)

कुमार कृष्णन
स्तंभकार

लाडली बहन पॉलिटिक्स

बिहार विधानसभा चुनाव आगामी अक्टूबर-नवंबर में संभावित है और सभी दलों के केंद्र में महिला वोटर हैं। इस बार मुकाबला नीतीश कुमार की जदयू और भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन बनाम कांग्रेस और तेजस्वी यादव की राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेतृत्व वाले महागठबंधन (इंडिया ब्लॉक) के बीच होगा लेकिन बिहार की सत्ता उसे ही मिलेगी जिस पर महिलाओं को भरोसा होगा ।

बिहार विधानसभा चुनावों में महिलाओं की भूमिका पिछले एक दशक में निर्णायक बनकर उभरी है। 2010 से लेकर 2020 तक के चुनावों में महिला मतदाताओं की भागीदारी लगातार बढ़ी है। 2025 के आगामी चुनावों में भी उनकी भूमिका अहम मानी जा रही है। 2010 के विधानसभा चुनावों में पहली बार महिला मतदाताओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों से ज्यादा रहा था। महिलाओं का मतदान प्रतिशत 54.85 फीसदी था जबकि पुरुषों का 50.70 फीसदी। यह बदलाव मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की महिलाओं के लिए चलाई गई योजनाओं, जैसे साइकिल योजना और पंचायती राज में 50 फीसदी आरक्षण का परिणाम था। यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी क्योंकि 2000 तक, मतदाता मतदान में लिंग अंतर लगभग 20 फीसदी था। सभी राजनीतिक दल महिलाओं को लुभाने में लगे हैं।

चुनाव आयोग के जारी आकड़ों के अनुसार, बिहार में 3.6 करोड़ महिला वोटर्स हैं। वहीं, प्रदेश में कुल वोटरों की संख्या 7.6 करोड़ है, यानी राज्य में 4 करोड़ पुरुष वोटर हैं। अक्टूबर 2024 में जारी वोटर लिस्ट में प्रति हजार पुरुष मतदाताओं पर महिला मतदाताओं की संख्या 910 थी, जो साल के अंत तक यह संख्या बढ़कर 914 हो गयी। बिहार चुनाव के दिन जैसे-जैसे करीब आ रहे हैं, लाडली बहन पॉलिटिक्स को लेकर चर्चा तेज होती जा रही है।

महिला मतदाताओं को अपने पाले में करने के लिए राज्य सरकार महिला संवाद' कार्यक्रम कर रही है। सरकार ने अगले दो महीनों में करीब दो करोड़ महिलाओं तक पहुंचने की योजना बनाई है। वहीं कांग्रेस पार्टी ने भी 'महिला की बात, कांग्रेस के साथ' अभियान शुरू किया है। अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की अध्यक्ष अलका लांबा के अनुसार इस अभियान का मकसद महिलाओं की जरूरतों, आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को उजागर करना और उन्हें पार्टी के चुनाव घोषणापत्र में शामिल करना है। इसे लेकर कांग्रेस की महिला नेत्रियों का दौरा लगातार जारी है।

इसके बाद सुप्रिया श्रीनेत, राज्यसभा सदस्य रंजीत रंजन का बिहार दौरा हो रहा है। अलका अलका के अनुसार -जनता ने भरोसा जताया, कांग्रेस ने कर दिखाया। अब बारी है बिहार की बहनों की ज़िंदगी में बदलाव लाने की।

कांग्रेस पार्टी ने बिहार की बहनों और बेटियों के लिए ऐतिहासिक पहल की है। माई बहिन मान योजना के अंतर्गत कांग्रेस पार्टी की अगुवाई

में इंडिया गठबंधन की सरकार बनने पर राज्य की पात्र बहनों और बेटियों को प्रति माह ₹2500 की आर्थिक सहायता सीधे उनके बैंक खातों में दी जाएगी। यह योजना न केवल आर्थिक राहत देगी बल्कि बिहार की महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाएगी। वहीं पूर्णिया जिला कांग्रेस कमिटी कार्यालय आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि जातीय सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार बिहार में 94.42 लाख परिवारों की मासिक आय ₹6000 से कम है, यानी लगभग 5 करोड़ लोग ₹40 रुपये प्रतिदिन पर गुजारा कर रहे हैं।81.91 लाख परिवारों की आय ₹10,000 प्रति माह से कम है। केंद्र की मोदी सरकार ने महंगाई की मार से आम जन-जीवन को संकट में ला दिया है। 60-70 रु का पेट्रोल-डीजल ₹100 के पार कर दिया। 400 का गैस सिलेंडर ₹1000 से ऊपर। 60-70 का दाल-तेल ₹200 के पार हैं। मोदी ने कई राज्यों में झूठी गारंटी से सत्ता हथियाई मगर दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश में सरकार बनने के बाद मुकर गयी।

ह्लमाई बहिन मान योजनाह्व के तहत बिहार की पात्र महिलाओं (18 से 60 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं) को ₹2500 प्रति माह सीधे उनके बैंक खाते में मिलेगा। कांग्रेस ने हमेशा महिलाओं के सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी है। कांग्रेस शासित कई प्रदेशों में लाडली, गृहलक्ष्मी और इंदिरा गांधी प्यारी बहना जैसी योजनाओं के तहत महिलाओं को आर्थिक सहायता दी जा रही है। सांसद रंजीत रंजन ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने सदैव देश की महिलाओं के अधिकार और सशक्तिकरण की सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। देश में लाडली योजना की शुरूआत सबसे पहले कांग्रेस ने की थी। दिल्ली में शीला दीक्षित सरकार ने 2008 में लाडली योजना शुरू की थी, जिसके तहत बेटी के जन्म के समय ₹36,000 और कक्षा 1 से 12 तक पढ़ाई के लिए ₹25,000 की सहायता की जाती थी। 12वीं कक्षा पूरी करने पर खाते में 1 लाख का मैच्यूरिटी अकाउंट सीधे जाता था। कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने गृह लक्ष्मी योजना शुरू की जिसके तहत हर महिला को प्रति माह ₹2000 बैंक खाते में दिया जा रहा है। इसका लाभ 1.35 करोड़ महिलाओं को मिल रहा है। हिमाचल प्रदेश में इंदिरा गांधी प्यारी बहना सुख सम्मान निधि योजना के तहत पात्र महिलाओं को प्रति माह 1500 की सहायता दी जा रही है। झारखंड की कांग्रेस गठबंधन सरकार ने मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के अंतर्गत महिलाओं को प्रति माह ₹2500 की वार्षिक सहायता देना शुरू किया है। पहले यह₹1000 थी। कांग्रेस ने इसे बढ़ाने का वादा किया था और वादा निभाया। योजना से 56.61 लाख महिलाएं लाभान्वित हो रही हैं.

बिहार में भी कांग्रेस का हाथ, महिलाओं को सशक्त करने के साथ।वजह वही है, नीतीश-मोदी सरकार की महंगाई और गरीबी ने लोगों को त्राहिमाम किया। भाजपा-जेडीयू के वादे झूठे साबित हुए. अब जनता सच्चे बदलाव की उम्मीद करती है और कांग्रेस है तो उम्मीद है। आशा कार्यकर्ता, जीविका, आंगनवाड़ी, स्वयं सहायता समूह और मध्याह्न भोजन पकाने वाली महिलाओं पर महिला कांग्रेस का फोकस है।

बिहार में लगभग दो करोड़ से ज्यादा जीविका दीदी हैं जो नीतीश कुमार की खास वोटर मानीं जाती हैं। इन महिला वोटर को साधने के लिए जहां तेजस्वी यादव ने माई-बहिन मान योजना की घोषणा की है तो वहीं अब कांग्रेस भी महिला वोटरों को साधने की पूरी तैयारी में जुट गई है। उसके लिए बड़ा अभियान आरंभ कर दिया है।

संजय सिन्हा
स्तंभकार

कोरोना के नए वेरियंट्स

भारत सहित अन्य देशों में एक बार फिर से कोरोना वायरस संक्रमण का खतरा मंडराने लगा है। स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी हालिया आंकड़ों के अनुसार देश में अब तक कुल 1200 से अधिक कोविड-19 के सक्रिय मामले दर्ज किए जा चुके हैं, जबकि 12 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। एक ओर जहां लंबे समय तक कोरोना के मामलों में गिरावट देखने को मिली थी, वहीं अब नए वेरिएंट्स के साथ यह वायरस एक बार फिर लोगों को चिंता में डाल रहा है। आइये समझते हैं महामारी की वापसी कैसे हुई।

2020 और 2021 में देश ने कोरोना की भयावह लहरों का सामना किया था जिसने लाखों लोगों को प्रभावित किया। टीकाकरण और जनसहभागिता के चलते पिछले कुछ समय से स्थिति नियंत्रण में थी लेकिन अब 2025 में फिर से मामलों में इजाफा देखने को मिल रहा है। भारत में 1200 से अधिक सक्रिय मामले सामने आ चुके हैं और इस बार भी सबसे अधिक असर दक्षिणी राज्यों, विशेषकर केरल, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में देखा जा रहा है। अगर हम राज्यों की स्थिति के बारे में सोचें तोः केरल में 420 से अधिक सक्रिय मामले हैं, तीन मौतें भी हुईं। महाराष्ट्र में 280 केस, दो मौतें। दिल्ली और गुजरात में धीरे-धीरे मामले बढ़ते हुए दिख रहे हैं। नए वेरिएंट्स में जे एन1, एल एफ.7 और एन बी.1.8.1 से खतरा बढ़ा है। वर्तमान में जिन वेरिएंट्स के कारण संक्रमण फैल रहा है, वे हैं जे एन1, एल एफ.7 और एन बी.1.8.1। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि ये वेरिएंट्स पहले के मुकाबले अधिक संक्रामक हैं, हालांकि इनमें से कुछ वेरिएंट गंभीर लक्षण उत्पन्न नहीं करते। विशेषज्ञों की राय है कि येल यूनिवर्सिटी द्वारा हाल में किए गए अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ है कि नए वेरिएंट्स तेजी से म्यूटेट हो रहे हैं और यह हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को चकमा दे सकते हैं हालांकि, बूस्टर डोज और अपडेटेड टीकों से इनका प्रभाव काफी हद तक रोका जा सकता है।

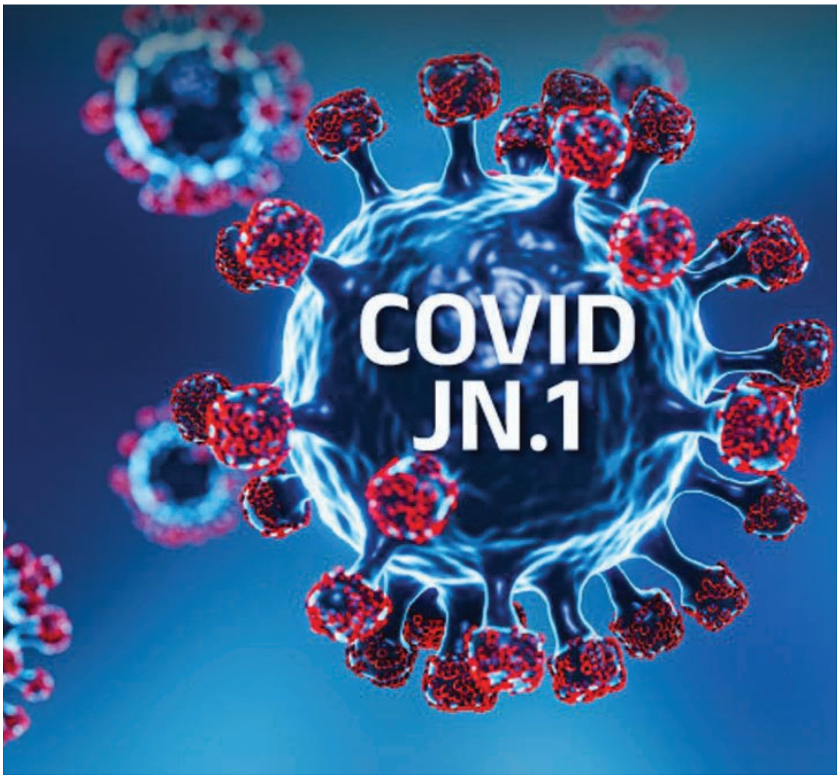

गौरतलब है कि नए वेरिएंट्स के लक्षण मुख्यतः समान ही हैं लेकिन कुछ मामलों में हल्के बदलाव देखे जा रहे हैं। अधिकतर मरीजों को हल्के बुखार, गले में खराश, खांसी और बदन दर्द की शिकायत हो रही है। विशेषज्ञ मानते हैं कि लक्षण हल्के हैं परंतु उच्च जोखिम वाले वर्गों (60 वर्ष से ऊपर, पहले से बीमार व्यक्ति) में इसका खतरा अधिक है। सामान्य लक्षणों में गले में खराश, हल्का या तेज बुखार, सिरदर्द, सांस फूलना, बदन दर्द और स्वाद और गंध का जाना (कुछ मामलों में)। मई 2025 की स्थिति को देखते हुए राज्य सरकारें और केंद्र सरकार सतर्क हो चुकी हैं। रेलवे स्टेशनों, एयरपोर्ट्स, बस अड्डों पर फिर से थर्मल स्क्रीनिंग, रैपिड एंटीजन टेस्टिंग, और आर टी पी सी आर टेस्ट को अनिवार्य किया जा रहा है, खासकर उन यात्रियों के लिए जो विदेश या उच्च संक्रमण क्षेत्रों से आ रहे हैं। सरकार के प्रयासों में सभी जिलों में कोविड-हेल्पलाइन नंबर

सक्रिय। अस्पतालों में ऑक्सीजन बेड्स की संख्या बढ़ाई गई। स्वास्थ्य कर्मियों को फिर से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

गर हम अस्पतालों की तैयारी के बारे में बात करें तो दूसरी लहर जैसी स्थिति की पुनरावृत्ति नहीं है। मध्यप्रदेश के ग्वालियर स्थित जी आर मे-डिकल कॉलेज समेत कई सरकारी अस्पतालों में कोविड वॉर्ड्स को दोबारा सक्रिय किया गया है। इनमें अतिरिक्त ऑक्सीजन सिलेंडर्स, वेंटिलेटर्स और दवाओं का स्टॉक सुनिश्चित किया जा रहा है। इसी प्रकार अस्पताल प्रबंधन में पृथक कोविड वार्डों की स्थापना। बायोमेडिकल कचरे के सुरक्षित निपटान की व्यवस्था। डॉक्टरों और नर्सों की तैनाती में तेजी। याद रहे ट-ीकाकरण अभियान का देश में 2021 से ही आरंभ हो गया था जिसके बाद लाखों लोगों को दोनों डोज दी गईं। अब 2025 में यह प्रश्न उठ रहा है कि क्या पहले ली गई वैक्सीन वर्तमान वेरिएंट्स के विरुद्ध प्रभावी है? विशेषज्ञों का उत्तर है– ₹आंशिक रूप से हां₹। येल यूनिवर्सिटी के शोध में यह निष्कर्ष सामने आया है कि बूस्टर डोज या अपडेटेड वैक्सीन इन वेरिएंट्स से रक्षा में सहायक हो सकती हैं। सरकार द्वारा तीसरी और चौथी डोज की सिफारिश की जा रही है, विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों और कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले लोगों को। अब बात आती है कि क्या लॉकडाउन की फिर से जरूरत पड़ेगी? फिलहाल सरकार ने लॉकडाउन की कोई योजना घोषित नहीं की है परंतु 'माइक्रो-कंटेनमेंट जोन' की नीति को फिर से लागू किया जा रहा है। संक्रमण की दर बढ़ने पर प्रभावित इलाकों में सीमित आवागमन, दुकानें बंद करना और स्कूल-कॉलेजों को ऑनलाइन करना संभव है।लोगों से अपील है कि सतर्क रहें, घबराएं नह-ीं।

स्वास्थ्य मंत्रालय और विशेषज्ञों ने साफ तौर पर कहा है कि यह स्थिति 2021 जैसी नहीं है, लेकिन सावधानी जरूरी है। यदि लोग कोविड अनुरूप व्यवहार अपनाएं, तो तीसरी या चौथी लहर जैसे हालातों से बचा जा सकता है। नागरिकों के लिए दिशा-निर्देशों में मास्क पहनें, विशेष रूप से भीड़भाड़ वाले स्थानों पर। हाथों को नियमित रूप से सैनिटाइज करें। सामाजिक दूरी बनाए रखें।लक्षण दिखने पर घर पर रहें और जांच कराएं।इस दौरान मीडिया और सोशल मीडिया की भूमिका अहम है। अफवाहें और भ्रम की स्थिति से बचने के लिए मीडिया को भी जिम्मेदारी से काम करने की जरूरत है। सोशल मीडिया पर चल रहे भ्रामक वीडियो और फर्जी दावा लोगों में डर फैला सकते हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के आधिकारिक बुलेटिन और विशेषज्ञों की बातों पर ही विश्वास करें।अंत में कह सकते हैं कि भारत एक विशाल देश है और यहां की जनसंख्या के हिसाब से संक्रमण का खतरा कभी भी अधिक हो सकता है। परंतु अगर जनभागीदारी, सरकारी नीतियों और वैज्ञानिक सलाहों को गंभीरता से लिया जाए, तो इस संकट को बड़े स्तर पर फैलने से रोका जा सकता है। हमें याद रखना चाहिए कि 'हम सुरक्षित तभी हैं जब हर कोई सुरक्षित है।'

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और सोशल एक्टिविस्ट हैं)

II ललित गर्ग
स्तंभकार

नए आर्थिक सूरज बनने के सुखद एवं गौरवपूर्ण पल

नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) बीवीआर सुब्रह्मण्यम ने रविवार की सुबह नये उगते सूरज के साथ भारत के नये आर्थिक सूरज बनने की सुखद एवं आह्लादकारी खबर दी। उन्होंने बताया कि भारत जापान को पीछे छोड़कर दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और अब अगले ढाई से तीन वर्षों में जर्मनी को हटाकर तीसरे स्थान पर पहुंच जाएगा। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के आंकडों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और 4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की जीडीपी बन चुके भारत ने अनेक नवीन संभावनाओं एवं उपलब्धियों को पंख लगाये हैं। निश्चित ही भारत आर्थिक क्षेत्र के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में एक महाशक्ति बन कर उभर रहा है, जो हर भारतीय के लिये गर्व एवं गौरव की बात है।

सुब्रह्मण्यम ने कहा, केवल संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और जर्मनी ही हमसे बड़े हैं और जो योजना बनाई जा रही है, अगर हम उसी पर टिके रहते हैं, अपनी योजनाओं एवं नीतियों को आगे बढ़ाते है तो भारत शीघ्र ही तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक अप्रैल 2025 में कहा था कि 2025 में भारत की नॉमिनल जीडीपी बढ़कर 4,187.017 अरब डॉलर हो जाएगी। वहीं, जापान की जीडीपी का आकार 4,186.431 अरब डॉलर रहने का अनुमान है। आईएमएफ के अनुमानों के अनुसार, आने वाले वर्षों में भारत जर्मनी को पछाड़कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी बन सकता है। 2027 तक भारत की अर्थव्यवस्था 5 ट्रिलियन डॉलर के आंकड़े को पार कर सकती है और इस दौरान जीडीपी का आकार 5,069.47 अरब डॉलर रहने का अनुमान है। वहीं, 2028 तक भारत की जीडीपी का आकार 5,584.476 अरब डॉलर होगा, जबकि इस दौरान जर्मनी की जीडीपी का आकार 5,251.928 अरब डॉलर रहने का अनुमान है। आईएमएफ के मुताबिक, 2025 में अमेरिका 30,507.217 अरब डॉलर के आकार के साथ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना रहेगा। वहीं, चीन 19,231.705 अरब

डॉलर के साथ दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगा।

भारत का चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने से विश्व स्तर पर कई महत्वपूर्ण प्रभावों में बढ़ोतरी होगी। भारत का अंतरराष्ट्रीय मंचों जैसे जी 20 और आईएमएफ में प्रभाव बढ़ेगा। भारत में फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट (एफडीआई) में और वृद्धि होगी, क्योंकि ग्लोबल कंपनियां भारत को एक आकर्षक बाजार के रूप में देख रही हैं। इससे भारत और जापान के बीच मजबूत रणनीतिक साझेदारी, जैसे चंद्रयान-5 और सैन्य सहयोग, भारत-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता को बढ़ावा मिलेगा। भारत इस उपलब्धि के बाद ग्लोबल इकोनॉमिक लीडरशिप की दिशा में और करीब आ गया है। भारत अगर 2028 तक जर्मनी को पीछे छोड़ देता है तो लीडरशिप और मजबूत होगी। भारत विश्वगुरु बनने एवं विश्व नेतृत्व करने में सक्षम होगा। भारत ने जापान को पछाड़ कर जो छलांग लगायी है, इसके पीछे जापान की अर्थव्यवस्था के सामने कई चुनौतियों रही है। आईएमएफ के अनुमान के अनुसार, 2025 में जापान की जीडीपी ग्रोथ रेट केवल 0.3 प्रतिशत रहने की उम्मीद है, जो भारत की 6.5 प्रतिशत की तुलना में बहुत कम है। जापान की उम्रदराज आबादी और लो बर्थ रेट ने लेबर फोर्स को सीमित कर दिया है। अमेरिका और अन्य देशों द्वारा लगाए गए टैरिफ और व्यापार नीतियों ने जापान की निर्यात-आधारित अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। जापान की अर्थव्यवस्था कई दशकों से स्थिरता के लिए संघर्ष कर रही है, जिसके कारण वह भारत जैसे तेजी से बढ़ते देशों से पिछड़ गया है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने यह भी कहा कि भारत की विकास दर 2025 में 6.2 प्रतिशत और 2026 में 6.3 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जो कि बाकी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में ज्यादा है। इससे स्पष्ट है कि भारत अब सिर्फ जनसंख्या में ही नहीं, अर्थव्यवस्था के मामले में भी दुनिया में सबसे आगे निकलने की रेस में है। ग्रामीण इलाकों में खपत बढ़ने से ये विकास दर बनी रहेगी। हालांकि, ग्लोबल अनिश्चितता और ट्रेड टेंशन की वजह से इसमें थोड़ा असर पड़ सकता है।

सशक्त एवं विकसित भारत निर्मित करने, उसे दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनाने और अर्थव्यवस्था की सुनहरी तस्वीर निर्मित करने के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। मोदी सरकार ने देश के आर्थिक भविष्य को सुधारने पर ध्यान दिया, उनके अमृत काल का विजन तकनीक संचालित और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है। मोदी सरकार की नियोजित एवं दूरगामी सोच का ही परिणाम है रिजर्व बैंक के पास सोने के भंडार में लगातार वृद्धि हो रही है। भारत में आर्थिक गतिविधियां नये शिखरों पर सवार है, क्योंकि भारत में डीमैट खाते 19 करोड़ के पार पहुंच चुके हैं। देश के कुल डीमैट खाते अब अन्य देशों की तुलना में नौवें स्थान पर हैं, जिसका मतलब है डीमैट खाते रूस, जापान, इथियोपिया, मैक्सिको जैसे देशों की आबादी से अधिक और बांग्लादेश की आबादी के करीब है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है, जिसमें 1,40,000 से अधिक पंजीकृत स्टार्टअप और हर 20 दिन में एक यूनिकॉर्न उभरता है। यूनिकॉर्न उन स्टार्टअप को कहा जाता है, जिनका मूल्यांकन एक अरब डॉलर हो जाता है।

दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर भारत ने जापान को पीछे छोड़ चौथी अर्थ-व्यवस्था बन गयी है। भारत ने अनेक आर्थिक क्षेत्रों में नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। लेकिन भारत के सामने चुनौतियां भी नयी-नयी शक्लों में उभर रही है। नयी आर्थिक उपलब्धियों एवं फिजाओं के बीच धनाढ्य परिवारों का भारत से पलायन कर विदेशों में बसने का सिलसिला चिन्ताजनक है। पलायनवादी सोच के कगार पर खड़े राष्ट्र को बचाने के लिए राजनीतिज्ञों एवं नीति नियामकों को अपनी संकीर्ण मनोवृत्ति को त्यागना होगा। तभी समृद्ध हो या प्रतिभाशाली व्यक्ति अपने ही देश में सुख, शांति, संतुलन एवं सह-जीवन का अनुभव कर सकेगा और पलायनवादी सोच से बाहर आ सकेगा। करोड़पतियों के देश छोड़कर जाने की 7500 की संख्या भले ही कुछ सुधरी है, लेकिन नये बनते, सशक्त होते एवं आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर भारत के लिये यह चिंतन का विषय होना ही चाहिए कि किस तरह भारत की समृद्धि एवं भारत की प्रतिभाएं भारत में ही रहे।

भारत के अति समृद्धशालियों की संख्या समूचे विश्व में सर्वाधिक है। इन समृद्धशालियों से उम्मीद यह की जाती है कि देश में रहकर समृद्धि हासिल करने वाले समय आने पर देश को लौटाएंगे भी। तभी देश आर्थिक दृष्टि से दुनिया की महाशक्ति बनने की दिशा में तीव्रता से गति कर सकेगा। सवाल यही है कि देश को लौटाने और फायदा देने का वक्त आता है तब धनाढ्यों में एकाएक विदेश में जाकर बसने की ललक कैसे और क्यों पैदा हो रही है? अपने देश के प्रति जिम्मेदारी निभाने के समय इस तरह की पलायनवादी सोच का उभरना व्यक्तिगत स्वार्थ, सुविधा एवं संकीर्णता को दर्शाता है। दुनियाभर में धन और निवेश प्रवासन के रुझान को ट्रैक करने वाली कंपनी की सालाना रिपोर्ट में अति समृद्ध भारतीयों का अपना सब-कुछ समेट कर हमेशा के लिए भारत से जुदा हो जाने का अनुमान अनेक प्रश्न खड़े करता है, सरकार को इन प्रश्नों पर गौर करने की जरूरत है।

सदियों पहले भारत एक विकसित सभ्यता एवं सोने की चिड़िया रहा है। भारत हर दृष्टि से समृद्ध देश रहा है। अंग्रेजों की बेड़ियों में जकड़ने से पहले मध्यकालीन दौर में दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी रहा। विदेशी आक्रांताओं ने देश को लूटा। इतिहास में झांकें, तो लग सकता है कि मौर्य साम्राज्य की तरह एक बार फिर भारत समृद्धि के शिखर पर आरोहण करते हुए नए आर्थिक सफर एवं दुनिया की बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर अग्रसर होने के लिये साजो-सामान तैयार कर रहा है। मॉर्गन स्टेनली के विशेषज्ञों ने कुछ ही समय पहले कहा है कि अगले दस साल भारत के लिए कुछ वैसे ही तेज विकास का समय होगा, जैसे चीन ने 2007 से 2012 के बीच देखा। आज के भारत में राजनीतिक एकता और सैन्य सुरक्षा के साथ पूरे इलाके का एक आर्थिक तंत्र भी विकसित हो रहा है। आर्थिक समृद्धि का दौर शुरू हुआ है तो इसके बाधक तत्वों पर विचार करना ज्यादा जरूरी है।

॥ हेमेन्द्र क्षीरसागर
स्तंभकार

महारानी अहिल्याबाई होलकर ने प्रजा हित के लिए आगे बढ़ीं और सफल दायित्वपूर्ण राजशाही का संचालन करते हुए 13 अगस्त, 1795 को दुनिया को अलविदा कह गई। महारानी अहिल्याबाई होलकर के जीवन, समर्पण, न्याय, विकास, संस्कार और जन कल्याण के कार्यों को भारतीय इतिहास में हमेशा याद रखा जाएगा।

जनसरोकारी अहिल्याबाई होलकर

महारानी, इंसाफ की देवी, जनसरोकारी, अहिल्याबाई होलकर मराठा साम्राज्य की एक प्रसिद्ध शासिका और मालवा क्षेत्र में होलकर राजवंश की संस्थापक थीं। अहिल्याबाई होलकर का जन्म 31 मई, 1725 को चौंडी गांव, अहिल्यानगर जिला, महाराष्ट्र में हुआ था। उनका विवाह मल्हार राव होलकर के पुत्र खंडेराव होलकर से हुआ था। खंडेराव की मृत्यु के बाद, अहिल्याबाई ने प्रशासन संभाला और अपने राज्य को मजबूत और समृद्ध किया। लोकमाता, अहिल्याबाई होलकर न्याय की ऐसी मूर्ति कि अपने बेटे को भी सजा-ए-मौत का फरमान सुनाने से भी नहीं हिचकीं।

एक बार जब अहिल्याबाई के बेटे मालोजीराव अपने रथ से सवार होकर राजबाड़ा के पास से गुजर रहे थे। उसी दौरान मार्ग के किनारे गाय का छोटा-सा बछड़ा भी खड़ा था। जैसे ही मालोराव का रथ वहां से गुजरा

अचानक कूदता-फांदता बछड़ा रथ की चपेट में आ गया और बुरी तरह घायल हो गया। थोड़ी देर में तड़प-तड़प कर उसकी वहीं मौत हो गई। इस घटना को नजरअंदाज कर मालोजीराव आगे बढ़ गए। इसके बाद गाय अपने बछड़े की मौत पर वहीं बैठ गई। वो अपने बछड़े को नहीं छोड़ रही थी।

कुछ ही देर बाद वहां से अहिल्याबाई भी वहां से गुजर रही थी। तभी उन्होंने बछड़े के पास बैठी हुई एक गाय को देखा, तो रुक गईं। उन्हें जानकारी दी गई। कैसे मौत हुई कोई बताने को तैयार नहीं था। अंततः किसी ने डरते हुए उन्हें बताया कि मालोजी के रथ की चपेट में बछड़ा मर गया। यह घटनाक्रम जानने के बाद अहिल्या ने दरबार में मालोजी की धर्मपत्नी मेनाबाई को बुलाकर पूछा कि यदि कोई व्यक्ति किसी की मां के सामने उसके बेटे का कत्ल कर दे तो उसे क्या दंड देना चाहिए? मेनाबाई ने तुरंत जवाब दिया कि उसे मृत्युदंड देना चाहिए।

इसके बाद अहिल्याबाई ने आदेश दिया कि उनके बेटे मालोजीराव के हाथ-पैर बांध दिए जाएं और उन्हें उसी प्रकार से रथ से कुचलकर मृत्यु दंड दिया जाए, जिस प्रकार गाय के बछड़े की मौत हुई थी। बेटे की जान लेने खुद रथ पर चढ़ गई थीं देवी अहिल्याबाई। इस आदेश के बाद कोई भी व्यक्ति उस रथ का सारथी बनने को तैयार नहीं था। तब अहिल्याबाई खुद आकर रथ पर बैठ गईं। वो जब रथ आगे बढ़ा रही थी, तब एक ऐसी घटना हुई, जिसने सभी को हैरान कर दिया।

वही गाय रथ के सामने आकर खड़ी हो गई थी। जब अहिल्याबाई के आदेश के बाद उस गाय को हटाया जाता तो वो बार-बार रथ के सामने आकर खड़ी हो जाती। यह देश दरबारी मंत्रियों ने महारानी से आग्रह किया कि यह गाय भी नहीं चाहती है कि किसी और मां के बेटे के साथ ऐसी घटना हो। इसलिए यह गाय भी दया करने की मांग कर रही है। गाय अपनी जगह पर रही और रथ वहीं पर अड़ा रहा। राजबाड़ा के पास जिस स्थान पर यह घटना हुई थी, उस जगह को आज सभी लोग 'आड़ा बाजार' के नाम से जानते है।

पुण्यश्लोक, त्याग की प्रतिमूर्ति, अहिल्याबाई ने मालवा की रानी के रूप में 1737 से 1795 तक शासन किया। उन्होंने हमेशा अपने राज्य और अपने लोगों को आगे बढ़ने का हौंसला दिया। ओंकारेश्वर पास होने के कारण और मां नर्मदा के प्रति श्रद्धा होने कारण महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया था। महारानी अहिल्याबाई होलकर ने प्रजा हित के लिए आगे बढ़ीं और सफल दायित्वपूर्ण राजशाही का संचालन करते हुए 13 अगस्त, 1795 को दुनिया को अलविदा कह गईं। महारानी अहिल्याबाई होलकर के जीवन, समर्पण, न्याय, विकास, संस्कार और जन कल्याण के कार्यों को भारतीय इतिहास में हमेशा याद रखा जाएगा। शत-शत नमन!

(पत्रकार, लेखक व स्तंभकार)

पद्मश्री डॉ. रामदरश मिश्र को आचार्य 'हाशमी' स्मृति पुरस्कार– 2025

देश के जानेमाने साहित्यकार पद्मश्री डॉ. रामदरश मिश्र को आचार्य 'हाशमी' स्मृति पुरस्कार- 2025 से नवाजा गया। शुक्रवार 30 मई, 2025 की संध्या, यह पुरस्कार द्वारका स्थित उनके आवास पर 'दूसरा मत' के संपादक एवं 32 पुस्तकों के लेखक ए आर आज़ाद एवं बाल कहानीकार व 'मेघ देवता' के लेखक सैयद असद आज़ाद ने सम्मानपूर्वक और गौरवमयी अंदाज़ में प्रदान किया।

आचार्य 'हाशमी' स्मृति पुरस्कार में उन्हें शील्ड, शॉल, प्रशस्ति-पत्र एवं 2100 रुपए की नगद राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर उन्हें हाल ही में प्रकाशित 'दूसरा मत' ग़ज़ल-विशेषांक भी भेंट की गई। इस ग़ज़ल-विशेषांक पर अपनी बेबाक राय रखते हुए पदमश्री डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा कि यह अंक पहली ही नज़र में लोगों को अपनी ओर खींच लेता है। उन्होंने अंदर के पृष्ठों को पलटने के बाद अपनी दूसरी प्रतिक्रिया में कहा कि यह शानदार अंक है। और आपने बड़े ही श्रम से इसे जानदार बना दिया है। उन्होंने अपने आशीर्वचन में कहा कि आपको इसके लिए बहुत-बहुत बधाई।

पुरस्कार वितरण के बाद आधे घंटे की गपशप में उन्होंने कई साहित्यिक प्रकरण पर चर्चा की। और अपने सुखद जीवन के संदर्भ पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि उम्र के इस पड़ाव पर भी लोगों का विशेषकर साहित्यकारों और पत्रकारों का प्यार मिल रहा है। आए दिन लोगबाग मिलने आते हैं। और टेलीफोन से हालचाल लेते रहते हैं। उन्होंने अपने परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। और कहा कि पूरे परिवार का प्रेम और सानिध्य हमें मिल रहा है। यह हमारे लिए सुखद और मन को गौरवान्वित करने वाला है।

उन्होंने आज की ग़ज़ल पर भी चर्चा की। और कहा कि ग़ज़ल में उर्दू के अल्फ़ाज़ों के मिश्रण से गजल बेहतरीन बन जाती है। उर्दू और हिन्दी तो दोनों बहन की तरह है। दोनों मिलकर ग़ज़ल को बेहतरीन बना देती है।

मालूम हो कि नामवर साहित्यकार पदमश्री डॉ. रामदरश मिश्र को आचार्य 'हाशमी' स्मृति पुरस्कार से पहले कई महत्वपूर्ण और गौरवान्वित करने वाले पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्हें पदमश्री से नवाज़ा जा चुका है। इसके साथ ही साथ उन्हें साहित्य अकादेमी का पुरस्कार भी प्रदान किया गया है। उन्हें सरस्वती सम्मान और व्यास सम्मान जैसे महत्वपूर्ण पुरस्कार से भी विभूषित किया जा चुका है।

डॉ. रामदरश मिश्र देश के एक प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। इन्होंने अपने शतायु से दो क़दम आगे के दीघार्यु जीवन से साहित्य को समृद्ध ही नहीं बल्कि बेहतर भी किया है। उनकी पहली प्रकाशित कविता 'चांद' है। उनका पहला काव्य-संग्रह 'पथ के गीत' 1951 में प्रकाशित हुआ।

प्रकाशित कृतियां

काव्यः पथ के गीत, बैरंग - बेनाम चिट्ठियां, पक गई है धूप, कंधे पर

सूरज, दिन एक नदी बन गया, मेरे प्रिय गीत, बाजार को निकले हैं लोग, जुलूस कहां जा रहा है?, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएं, आग कुछ नहीं बोलती, शब्द सेतु, बारिश में भीगते बच्चे, हंसी ओठ पर आंखें नम हैं (ग़ज़ल-संग्रह), बनाया है मैंने ये घर धीरे-धीरे (ग़ज़ल-संग्रह)।

उपन्यासः पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब, अपने लोग, रात का सफ़र, आकाश की छत, आदिम राग, बिना दरवाज़ा का मकान, दूसरा घर, थकी हुई सुबह, बीस बरस, परिवार, बचपन भास्कर का, एक बचपन यह भी, एक था कलाकार।

कहानी-संग्रह : खाली घर, एक वह, दिनचर्या, सर्पदंश, बसंत का एक दिन, इकसठ कहानियां, मेरी प्रिय कहानियां, अपने लिए, अतीत का विष, चर्चित कहानियां, श्रेष्ठ आंचलिक कहानियां, आज का दिन भी, एक कहानी लगातार, फिर कब आएंगे?, अकेला मकान, विदूषक, दिन के साथ, मेरी कथा यात्रा, विरासत, इस बार होली में, चुनी हुई कहानियां, संकलित कहानियां, लोकप्रिय कहानियां, 21 कहानियां, नेता की चादर, स्वप्नभंग, आखिरी चिट्ठी, कुछ यादें बचपन की (बाल-साहित्य), इस बार होली में, जिंदगी लौट आई थी,एक भटकी हुई मुलाकात, सपनों भरे दिन, अभिशप्त लोक, अकेली वह।

ललित निबंधः कितने बजे हैं, बबूल और कैक्टस, घर-परिवेश, छोटे-छोटे सुख, नया चौराहा, लौट आया हूं मेरे देश।

आत्मकथाः सहचर है समय।

यात्रावृत्तः घर से घर तक, देश- यात्रा।

डायरीः आते - जाते दिन, आस-पास, बाहर भीतर, विश्वास जिंदा है, सुख दुःख के राग।

रचनावलीः 14 खंडों में, कविता समग्र, कहानी समग्र।

संचयनःबूंद-बूंद नदी, नदी बहती है, दर्द की हंसी, सरकंडे की क़लम।

आलोचनाः

1. हिंदी आलोचना का इतिहास (हिंदी समीक्षाः स्वरूप और संदर्भ, हिंदी आलोचना प्रवृत्तियां और आधार भूमि),
2. ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा,
3. साहित्यः संदर्भ और मूल्य,
4. हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा,
5. आज का हिंदी साहित्य संवेदना और दृष्टि,
6. हिंदी कहानीः अंतरंग पहचान,
7. हिंदी कविता आधुनिक आयाम (छायावादोत्तर हिंदी कविता),
8. छायावाद का रचनालोक,
9. आधुनिक कविताः सर्जनात्मक संदर्भ,
10. हिंदी गद्यसाहित्यः उपलब्धि की दिशाएं,
11. आलोचना का आधुनिक बोध

संस्मरणः

स्मृतियों के छंद, अपने-अपने रास्ते, एक दुनिया अपनी, सहयात्राएं, सर्जना ही बड़ा सत्य है, सुरभित स्मृतियां।

साक्षात्कारः अंतरंग, मेरे साक्षात्कार, संवाद यात्रा

डॉ. घनश्याम बादल
स्तंभकार

विश्वसनीयता से जूझती हिंदी पत्रकारिता

30 मई 1826 को कोलकाता से प्रकाशित हिंदी के पहले समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन की ऐतिहासिक शुरूआत को याद करते हुए हिंदी पत्रकारिता दिवस मनाया जाता है।

बेशक, हिंदी पत्रकारिता का इतिहास गौरवशाली है लेकिन आज हिंदी पत्रकारिता की देश में सबसे ज्यादा समाचार पत्रों एवं चैनल होने के बावजूद भी वह जगह नहीं है जो उसे मिलनी चाहिए।

आज हिंदी पत्रकारिता अनेक संकटों से जूझ रही है। उनमें से कुछ बाह्य संकट हैं तो कुछ उसने खुद पैदा किए हैं।

आज हिंदी पत्रकारिता का बड़ा हिस्सा कॉरपोरेट घरानों के अधीन है। इससे स्वतंत्रता प्रभावित हुई है और कमाई व विज्ञापन आधारित अर्थ केंद्रित पत्रकारिता हावी हो गई है। सूचनाओं की विश्वसनीयता में गिरावट आई है. फेक न्यूज, अफवाहों और आधी-अधूरी खबरों का चलन बढ़ा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पारंपरिक पत्रकारिता के समक्ष एक बड़ी चुनौती बनकर खड़े हैं। अच्छे खासे संसाधन होने के बावजूद हिंदी मीडिया शहरी और राजनीति-केंद्रित खबरों पर ज्यादा आश्रित हो गया है जिससे सामाजिक मुद्दे पीछे छूट रहे हैं। यदि एक नजर हिंदी के समाचार पत्रों पर डाले तो अधिकांश नकारात्मक खबरों के बल पर ही ज़िंदा हैं । भेदभाव भरी रिपोर्टिंग और कॉपी पेस्ट वाले संपादकीय हिंदी पत्रकारिता का स्तर और भी गिरा रहे हैं .अब क्योंकि संपादक की डेस्क मैनेजमेंट ,मालिकों की जी हुजूरी तक सीमित रह गई है इसलिए हिंदी पत्र-।कारिता की विश्वसनीयता पर भी बड़े प्रश्नवाचक चिन्ह लगे हैं ।

एक समय था जब हिंदी पत्रकारिता में गणेश शंकर विद्यार्थी की परिपाटी वाले पत्रकारों की बड़ी संख्या थी. राजेंद्र माथुर, प्रभाष जोशी, लाला जगत नारायण, जगदीश किंजल्क जैसे एक से बढ़कर एक प्रखर पत्रकार हिंदी पत्रकारिता ने दिए हैं लेकिन आज ऐसे लोग न के बराबर रह गए हैं।

एक युग वह भी था जब हिंदी पत्रकारिता ने जनजागरण का कार्य किया। गणेश शंकर विद्यार्थी, बाल मुकुंद गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे पत्रकारों का का बोलबाला था जिन्हें सिद्धांतों से डिगाने की हिम्मत न राजनीति में थी ,न पैसे में । संपादक के रूप में उन्हें अखबार के मालिकों तक के आगे झुकना मंजूर नहीं था मगर अब वह बात कहां?

संकट अनेक है लेकिन फिर भी कुछ बात तो है हिंदी पत्रकारिता में जो आज भी 'देश की पत्रकारिता' के रूप में पहचान रखती है। हिंदी पत्र-।कारिता ने न केवल आमजन तक सूचनाएं पहुंचाईं अपितु भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी माध्यम से करोड़ों लोगों को समाचार उपलब्ध कराए जो एक बड़ी उपलब्धि है। इंटरनेट के माध्यम से हिंदी न्यूज पोर्टल्स, टीवी चैनल्स और यूट्यूब चैनल्स ने ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुंच बनाई है। अब हिंदी पत्रकारिता सिर्फ अखबारों तक सीमित नहीं है। राज्यों और जिलों में सशक्त क्षेत्रीय हिंदी पत्रकारिता विकसित हुई है, एक दौर वह भी था जब खबरों की सत्यता और विश्वसनीयता के लिए केवल अंग्रेजी अखबारों को ही मानक माना जाता था लेकिन आज ऐसी बात नहीं है और इससे कहा जा सकता है कि हिंदी पत्रकारिता का भविष्य अंधकारमय तो नहीं ही है।

समय के साथ हिंदी में डिजिटल कंटेंट की माँग बढ़ रही है। पोडकास्ट, यूट्यूब चैनल्स और ब्लॉगिंग के माध्यम से नई पीढ़ी हिंदी पत्रकारिता से जुड़ रही है। डेटा जर्नलिज्म और खोजी पत्रकारिता भी अब हिंदी पत्रकारिता का एक अनन्य अंग बन चुका है। भविष्य में तो खैर हिंदी पत्रकारिता में डेटा आधारित रिपोर्टिंग और इन्वेस्टिगेटिव जर्नलिज्म की अहम भूमिका होगी ही।

हिंदी पत्रकारिता की एक खास बात इसका लचीलापन भी है. यदि अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सहयोग बढ़े तो राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत वैकल्पिक मीडिया मॉडल बन सकता है। भविष्य में ₹पाठक-समर्थित पत्र-।कारिता₹ जैसे मॉडल हिंदी में भी फल-फूल सकते हैं ।

आज हिंदी पत्रकारिता संक्रमण काल से गुजर रही है। एक ओर वह कॉरपोरेट और तकनीकी दबावों से जूझ रही है, वहीं दूसरी ओर डिजिटल युग में उसके सामने नए अवसर भी हैं। यदि हिंदी पत्रकारिता जनहित, निष्पक्षता और विश्वसनीयता को बनाए रख सके, तो उसका भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

लेकिन आज भी हिंदी पत्रकारिता में कई सुधार जरूरी हैं ताकि वह फिर से जनविश्वास अर्जित कर सके और लोकतंत्र का सशक्त स्तंभ बन सके।

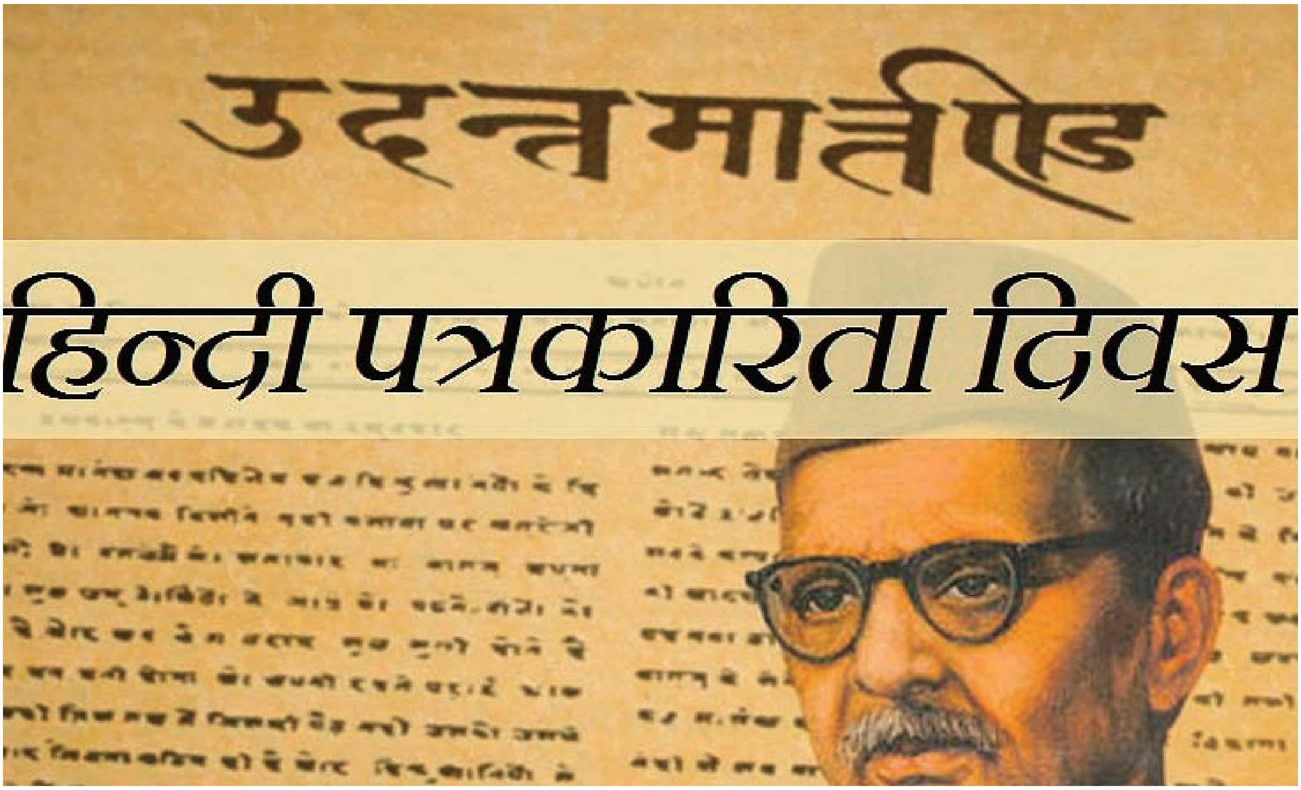

हिंदी पत्रकारिता की स्वतंत्रता और निष्पक्षता बनाए रखनी है तो पत्रकारों पर राजनीतिक या कॉरपोरेट दबाव नहीं होना चाहिए और दबाव हो भी तो उसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। खबरें निष्पक्ष और तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए, न कि किसी एजेंडा के अनुसार। फेक न्यूज और अफवाहों पर नियंत्रण के लिए फैक्ट-चेकिंग टीमों का गठन हो । आज हर खबर की सत्यता की जांच समय की मांग है। भ्रामक हेडलाइन और ह्यक्लिकबेटह्न यानी सुर्खियों से शिकार संस्कृति पर भी लगाम कसे जाने की सख़्त जरूरत है। किसानों, आदिवासियों, महिलाओं, मजदूरों, बेरोजगारी आदि जैसे मुद्दों को प्राथमिकता दी जाएगी तो हिंदी पत्रकारिता अधिक प्रभावशाली होकर सामने आएगी।

हिंदी पत्रकारिता के उज्जवल भविष्य के लिए अत्यावश्यक है कि क्षेत्रीय पत्रकारों को आर्थिक व कानूनी सुरक्षा प्रदान की जाए, उन्हें डिजिटल टूल्स, डेटा जर्नलिज्म, और एथिकल रिपोर्टिंग का नियमित प्रशिक्षण दिया जाए। अपनी अलग पहचान बनाए रखने के लिए हिंदी पत्रकारिता को भाषा की शुद्धता और उच्च आदर्श व निष्पक्षता का मानक तय करना होगा । भाषा की दृष्टि से भी गुणवत्ता में भारी गिरावट आई है। व्याकरण, शैली और शब्द चयन में बहुत सुधार आवश्यक है।

इनके साथ-साथ 'पेड न्यूज' के दौर में प्रायोजित समाचार और खबरों के बीच स्पष्ट अंतर दिखना चाहिए और 'पेड न्यूज' की प्रवृत्ति पर सख्त नियंत्रण होना बहुत जरूरी है। खबर और विज्ञापन को स्पष्ट रूप से अलग नजर आना ही चाहिए।

अब अखबार केवल हार्ड कॉपी के रूप में नहीं अपितु ई पेपर के रूप में भी फल फूल रहे हैं । ऑनलाइन पत्रकारिता में त्वरित रिपोर्टिंग के दबाव में अक्सर तथ्यात्मक गलतियाँ होती हैं पर इसे रोकना होगा। सोशल मीडिया पर पत्रकारिता करते समय भी पेशेवर मानकों का पालन आवश्यक है।

इन सबसे बढ़कर हिंदी पत्रकारिता के दिशा निर्देशकों पाठकों की भागीदारी बढ़ाने की और विशेष ध्यान देना होगा। ओपन कमेंट सेक्शन, फीडबैक कॉलम और जन संवाद के माध्यम से पाठकों की राय को महत्व दिया जाए व जनहित पत्रकारिता को प्राथमिकता मिले तो हिंदी पत्रकारिता सब संकटों से पार पाकर नई ऊंचाइयों पर दिखाई देगी इसमें संदेह नहीं है मगर संदेह है तो केवल इस बात का कि आज के अर्थप्रधान युग में निरर्थक खबरें, निहितस्वार्थ, राजनीतिक दबाव, मालिकों की मनमानी, कमजोर संकल्प वाले संपादक और बदहाली में जी रहे स्थानीय संवाददाता और उन पर मंडराता माफियाओं के साया क्या ऐसा होने देगा ?

यदि हिंदी पत्रकारिता को लोकतंत्र का मजबूत स्तंभ बनना है तो उसे अपने सिद्धांतों, भाषा, और ज़िम्मेदारी का पुनः मूल्यांकन करना होगा और तकनीकी, पारदर्शिता और जनसरोकार को प्राथमिकता देकर ही यह विश्वसनीयता प्राप्त की जा सकती है।

(लेखक वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

II विजय गर्ग
स्तंभकार

कक्षा 12 के साथ छात्रों के लिए शीर्ष कैरियर पथ

जॉब मार्केट अब गतिशील, कौशल-आधारित विकल्पों के साथ काम करता है जो रचनात्मकता, नवाचार और व्यक्तिगत हितों को महत्व देते हैं। जॉब मार्केट अब गतिशील, कौशल-आधारित विकल्पों के साथ काम करता है जो रचनात्मकता, नवाचार और व्यक्तिगत हितों को महत्व देते हैं। पीढ़ियों से, हमें यह विश्वास करने के लिए वातानुकूलित किया गया है कि अंक सफलता का अंतिम उपाय हैं। यह विचार कि केवल शीर्ष स्कोरर जीवन में महान चीजों को प्राप्त करते हैं, गहराई से अंतर्वर्धित हो गए हैं, यह आकार देते हुए कि युवा शिक्षार्थियों को कैसे निर्देशित और आंका जाता है। लेकिन जैसा कि ब्रूस ली ने प्रसिद्ध कहा, ₹सफल योद्धा औसत आदमी है, जिसमें लेजर जैसा फोकस है।₹ इसलिए, यदि आप अपने आप को बीच में कहीं पाते हैं और अपनी क्षमता पर संदेह कर रहे हैं, तो यह जान लें - आपकी यात्रा बहुत दूर है।

निमार्ता अर्थव्यवस्था यदि आप कहानी, डिजाइन या आत्म-अभिव्यक्ति से प्यार करते हैं, तो डिजिटल और रचनात्मक अर्थव्यवस्था अंतहीन संभावनाएं प्रदान करती है। ₹क्रिएटिव हस्टलर₹ की दुनिया में आपका स्वागत है - जहां मौलिकता अवसर को पूरा करती है। अनुभव सिंह बस्सी, भुवन बम, तकनीकी गुरुजी या प्राजक्ता कोली जैसे रचनाकारों के बारे में सोचें। उन्होंने पारंपरिक मार्गों का पालन नहीं किया, लेकिन निरंतरता, रचनात्मकता और साहस के साथ, वे भारत के कुछ सबसे मान्यता प्राप्त डिजिटल सितारे बन गए हैं।

चाहे आपका जुनून यूट्यूब ,एनीमेशन, ग्राफिक डिजाइन, संगीत, नृत्य, फिल्म निर्माण, या वॉयस-ओवर कलात्मकता में निहित हो - आपके लिए एक जगह है। सबसे अच्छा? आपको फैंसी डिग्री की आवश्यकता नहीं है, बस सीखने और बनाने की इच्छा, ईडीएएस और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म आपके कौशल को तेज करने और अपने जुनून को पेशे में बदलने में मदद करने के लिए मुफ्त और सशुल्क पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।

फैशन और जीवन शैली

यदि फैशन, सौंदर्य, या जीवन शैली की सामग्री आपको उत्तेजित करती है, तो ₹रनवे टू रियल लाइफ₹ में आपका स्वागत है - ट्रेंडसेटर के लिए एक ग्लैमरस अभी तक प्रतिस्पर्धी उद्योग। कैरियर विकल्पों में मेकअप कलात्मकता, हेयरस्टाइल, फैशन डिजाइनिंग, कॉस्ट्यूम डिजाइन, मॉडलिंग, फोटोग्राफी, फिटनेस कोचिंग, डायटेटिक्स, सोशल मीडिया प्रबंधन और सार्वजनिक संबंध शामिल हैं।

जबकि इनमें से कुछ करियर के लिए औपचारिक शिक्षा और इंटर्नशिप की आवश्यकता होती है, कई अन्य अल्पकालिक प्रमाणपत्र या प्रशिक्षुता के माध्यम से शुरू कर सकते हैं। यह स्थान आत्मविश्वास, रचनात्मकता और दृढ़ता की मांग करता है - लेकिन पुरस्कार, रचनात्मक और वित्तीय दोनों, अपार हो सकते हैं। सेवा उद्योग यदि आप लोगों के साथ जुड़ने और उन्हें मूल्यवान महसूस कराने का आनंद लेते हैं, तो आतिथ्य और सेवा क्षेत्र एक महान फिट हो सकता है। ये ₹एक्सपीरियंस मेकर्स₹ हैं - ऐसे

व्यक्ति जो दूसरों के लिए यादगार पलों को तैयार करने में मदद करते हैं।

केबिन क्रू, शेफ, होटल और इवेंट मैनेजमेंट, वेडिंग प्लानिंग, ट्रैवल कंसल्टेंसी, ह्यूमन रिसोर्स, मोटिवेशनल स्पीकिंग, केयरगिविंग, नर्सिंग, चाइल्डकेयर, काउंसलिंग और थेरेपी में करियर ऑप्शन स्पैन। जबकि कुछ भूमिकाओं के लिए पेशेवर प्रशिक्षण या डिग्री की आवश्यकता होती है, सबसे आवश्यक विशेषता दूसरों की मदद करने और उनके जीवन में बदलाव लाने की वास्तविक इच्छा है।

कॉर्पोरेट करियर यदि एक संरचित 9-से-5 जीवन, सॉफ्टवेयर, कोडिंग, या कॉर्पोरेट बोर्डरूम की चर्चा आपसे अपील करती है, तो आपको ₹क्लब कॉर्पोरेट₹ के लिए तैयार किया जा सकता है। यहां, आप एसऐपी सलाहकार, ऐआई या मशीन लर्निंग इंजीनियर, डेटा वैज्ञानिक, व्यवसाय विश्लेषक, उत्पाद प्रबंधक या वेब / ऐप डेवलपर बन सकते हैं।

जबकि एक कंप्यूटर विज्ञान की डिग्री मदद करती है, इनमें से कई भूमिकाएं प्रमाणपत्र और परियोजना का अनुभव उतना ही महत्व देती हैं। आप वित्तीय योजनाकार, विश्लेषक, जोखिम प्रबंधक, या एक्चुअरी जैसी वित्त भूमिकाओं का भी पता लगा सकते हैं - आमतौर पर अर्थशास्त्र, वाणिज्य या वित्त में डिग्री के साथ शुरू होता है, इसके बाद सीएफपी, सीएफए या एफआरएम जैसे प्रमाणपत्र होते हैं।

मार्केटिंग एक और तेजी से बढ़ने वाला क्षेत्र है, जिसमें डिजिटल मार्केटिंग, ब्रांड प्रबंधन और उच्च मांग में सोशल मीडिया रणनीति में भूमिकाएं हैं। व्यवसाय या विपणन में एक डिग्री, हाथों पर अनुभव के साथ जोड़ा गया, रास्ता प्रशस्त कर सकता है।

कौशल-आधारित नौकरियां ये 'स्किल स्मिथ' हैं - पेशेवर जो हमारे आसपास की दुनिया का निर्माण और ठीक करते हैं। इनमें इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर, मैकेनिक, विमान तकनीशियन, एचवीएसी विशेषज्ञ, बढ़ई, कृषि तकनीशियन, नर्स और पैरामेडिक्स शामिल हैं।

इस तरह के करियर की शुरूआत अक्सर आईटीआई डिप्लोमा, पॉलिटेक्निक कोर्स या अप्रेंटिसशिप से होती है। उन्हें कभी-कभी गलत तरीके से 'कम भुगतान' या 'कम प्रतिष्ठित' के रूप में लेबल किया जाता है, लेकिन वास्तव में, कुशल पेशेवरों की अत्यधिक मांग की जाती है और वे अनुभव के साथ सुंदर कमाई कर सकते हैं।

सरकारी नौकरियां अंत में, हम बारहमासी पसंदीदा में आते हैं - 'सरकारी नौकरी का सपना।' यदि आप अनुशासित, धैर्यवान और राष्ट्र की सेवा करने के लिए उत्सुक हैं, तो सरकारी करियर शक्ति, प्रतिष्ठा, स्थिरता और एक अच्छी तरह से सम्मानित जीवन शैली प्रदान करते हैं।

किसी भी क्षेत्र में स्नातक की डिग्री के साथ, आप यूपीएससी, राज्य सिविल सेवाओं जैसी परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं, या एनडीए या एसएसबी के माध्यम से रक्षा बलों में शामिल हो सकते हैं। एसएससी परीक्षा विभिन्न सरकारी विभागों में भूमिकाएं खोलती है, और पुलिस और अर्धसैनिक बलों में भी विकल्प हैं।

अंतिम विचार औसत अंक वाले सभी छात्रों को जो खोया या अनिश्चित महसूस करते हैं - निराश न हों। निशान सिर्फ संख्या हैं, न कि आपकी पहचान या भाग्य। अपने जुनून की खोज करें, अपने कौशल का निर्माण करें, और आगे बढ़ते रहें। जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने एक बार कहा था, 'अगर कड़ी मेहनत आपकी आदत बन जाए, तो सफलता आपकी नियति बन जाएगी।'

(सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार।)

डॉ. सत्यवान सौरभ
स्तंभकार

कुआं सूखने पर ही पता चलता है पानी की कीमत

एक सुदूर घाटी में बसे गांव में एक झरना था जिसे जीवन धारा कहा जाता था। पीढ़ियों तक ग्रामीणों ने इसका उपयोग किया, लेकिन जब आधुनिक सुविधाएं आईं, तो यह उपेक्षित हो गया। एक साल, भीषण सूखे ने झरने को सुखा दिया, और तभी ग्रामीणों को इसकी कीमत का एहसास हुआ। यह कहानी दर्शाती है कि हम अक्सर किसी चीज के महत्व को तब तक नहीं समझते जब तक वह खत्म नहीं हो जाती। पानी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे स्वास्थ्य, संबंध और स्वतंत्रता का प्रतीक है। हम अक्सर मान लेते हैं कि ये हमेशा बने रहेंगे, परंतु जब यह संकट में होते हैं, तभी हम उनकी कीमत समझते हैं। जीवन की क्षणभंगुरता हमें वर्तमान का आदर करने के लिए प्रेरित करती है। जैसे नल से पानी की सतत आपूर्ति को हम सामान्य मानते हैं, वैसे ही हम अपनों, स्वास्थ्य और स्वतंत्रता को भी हल्के में लेते हैं।

जब संसाधन प्रचुर मात्रा में होते हैं, तो हम उनकी कद्र करना छोड़ देते हैं। अरस्तू के नैतिक दर्शन के अनुसार, जागरूकता और संतुलन ही सच्चे गुणों को जन्म देते हैं। भरे कुएं का पानी हमें कृतज्ञ नहीं बनाता, परंतु पानी की कमी हमें उसकी महत्ता सिखाती है। 1930 के दशक की महामंदी ने लोगों को यह समझाया कि संसाधनों की उपलब्धता और कमी का चक्र कैसा होता है। ग्रीक त्रासदियों में अक्सर चरित्रों को जीवन का सच्चा अर्थ तब पता चलता है जब वे सब कुछ खो चुके होते हैं। शेक्सपियर के किंग लियर को प्यार की वास्तविकता तब समझ आई जब वह धोखा खा चुका था। महामारी ने भी हमें सामाजिक मेलजोल की अहमियत सिखाई। मानवता बार-बार संसाधनों का दुरुपयोग करती है और फिर संकट के समय उन्हें बचाने का प्रयास करती है। नीत्शे की शाश्वत पुनरावृत्ति की अवधारणा बताती है कि जब तक हम सच में नहीं सीखते, हम वही गलतियां दोहराते हैं। 1930 के डस्ट बाउल संकट ने

कृषि को नुकसान पहुंचाया, जिससे सबक लेकर सुधार हुए, लेकिन समय के साथ लोग फिर लापरवाह हो गए।

उपयोगितावादी दर्शन कहता है कि किसी चीज का मूल्य उसकी उपयोगिता से निर्धारित होता है। जल की वास्तविक कीमत उसकी उपलब्धता के अनुसार बदलती है। उप-सहारा अफ्रीका में पानी की कमी ने जल संरक्षण के नए समाधान उत्पन्न किए। इसी तरह, जब कोई संसाधन दुर्लभ हो जाता है, तब उसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। जल संकट सिर्फ मानव जीवन ही नहीं, बल्कि पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है। पारिस्थितिक दर्शन बताता है कि हमें प्रकृति के प्रति जागरूक होना चाहिए। अरल सागर का सूखना इसका उदाहरण है, जिससे सामाजिक और आर्थिक संकट पैदा हुए। यदि हम संसाधनों को संरक्षित नहीं करते, तो हमारा अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है। धार्मिक और दार्शनिक परंपराएं बताती हैं कि वंचना मूल्य की गहरी समझ देती है। रमजान के उपवास लोगों को भोजन की कीमत और जरूरतमंदों की स्थिति का एहसास कराते हैं। इसी तरह, कठिनाइयाँ हमें जीवन की असली जरूरतों का महत्व सिखाती हैं।

मानव अस्तित्व प्रकृति पर निर्भर है, और जल संकट इस निर्भरता को दर्शाता है। फुकुशिमा परमाणु आपदा ने भी दिखाया कि तकनीकी विकास के बावजूद हम प्राकृतिक शक्तियों के आगे असहाय हैं। यह हमें हमारे संसाधनों की सीमाओं का सम्मान करना सिखाता है। पानी जीवन देता है, परंतु बाढ़ और सुनामी जैसी आपदाओं से विनाश भी ला सकता है। ताओवाद के अनुसार, जीवन विरोधाभासों से भरा है, और हमें संतुलन बनाए रखना सीखना चाहिए। विभिन्न संस्कृतियों में जल को शुद्धिकरण का प्रतीक माना जाता है। ईसाई धर्म में बपतिस्मा का जल आत्मा की पुनर्जन्म का संकेत देता है। कुएं का सूखना हमें चेतावनी देता है कि हमें अपने संसाधनों की रक्षा करनी चाहिए। महात्मा गांधी ने कहा था, 'पृथ्वी हर व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त प्रदान करती है, लेकिन हर व्यक्ति के लालच को पूरा नहीं कर सकती।' भारत में चिपको आंदोलन इस बात का उदाहरण है कि समुदाय मिलकर प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा कर सकता है।

कहावत 'जब तक कुआं सूख नहीं जाता, हमें पानी की कीमत का पता नहीं चलता' एक गहरी सच्चाई को उजागर करती है। हमें संसाधनों के खत्म होने से पहले उनके महत्व को समझना चाहिए। जल, प्रेम, स्वास्थ्य या स्वतंत्रता–इन सभी को खोने से पहले संजोना चाहिए ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनका संरक्षण हो सके। पानी सिर्फ एक भौतिक संसाधन नहीं है, बल्कि यह जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं–स्वास्थ्य, रिश्ते और स्वतंत्रता–का प्रतीक भी है। जब ये आसानी से उपलब्ध होते हैं, तो हम उन्हें हल्के में लेते हैं, लेकिन जब वे खतरे में होते हैं या खो जाते हैं, तब हमें उनका महत्व समझ आता है। 'कुआं सूखने पर ही पता चलता है पानी की कीमत।'

॥ सुभाष शिरढोनकर
स्तंभकार

विलेन वाले किरदारों से दूरी बना रहे हैं देओल

वेब सीरीज 'आश्रम' के बाद फिल्म 'एनिमल' (2023) में अबरार हक का किरदार निभाने के बाद बॉबी देओल की विलेन वाली इमेज बनी लेकिन इसके बाद उनकी एक और विलेन केरेक्टलर वाली फिल्मब 'कंगुवा' (2024) बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हो गई।

350 करोड़ के बजट में बनी फिल्म 'कंगुवा' (2024) ने दुनिया भर में सिर्फ 106 करोड़ रुपए की कमाई की।

फिल्म 'एनिमल' (2023) में बॉबी देओल ने बिना कोई डायलॉग बोले सिर्फ 10 मिनट के रोल में पूरी महफिल लूट ली। फिल्म में उनकी जबरदस्त परफॉर्मेंस की खूब तारीफ हुई। यह फिल्म बॉबी देओल के करियर के लिए संजीवनी साबित हुई है।

'एनिमल' (2023) ने ना केवल बॉबी देओल के डूबते करियर को नई उड़ान दी बल्कि उनकी झोली भी तमाम ऑफर्स से भर दी।

बॉबी देओल बॉलीवुड की फिल्म 'लाहौर 1947' के अलावा साउथ की फिल्मुें 'हरी हरा वीरा मल्लू' और 'एनबीके 109'जैसी फिल्में भी कर रहे हैं।

इस तरह की खबरें भी आ रही है कि एक रेप केस में गलत तरीके से फंसाए गए व्यक्ति पर आधारित डायरेक्टर अनुराग कश्यप की फिल्म में बॉबी देओल नजर आएंगे।

बॉबी देओल 'एक था टाइगर', 'टाइगर जिंदा है', 'वॉर', 'पठान' और 'टाइगर 3' जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्मों के बाद वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स की अगली कड़ी वाली फिल्म 'अल्फा' में विलेन के किरदार में नजर आने वाले हैं।

फिल्म में आलिया भट्ट और बॉबी देओल का एक एक्शन सीक्वेंस

भी नजर आएगा। यह एक्शन सीन पिछले दिनों फिल्म सिटी में शूट किया गया। शिव रावल की डायरेक्ट की जाने वाली इस फिल्म में आलिया के अलावा एक्ट्रेस शरवरी वाघ भी हैं जो सुपर एजेंट के बेहतरीन किरदार में नजर आएंगी।

खबरें आ रही हैं कि इसके बाद बॉबी ने अपनी इस इमेज से छुटकारा पाने का फैसला किया है। इस बारे में खुद बॉबी देओल का कहना है कि 'जब आप किसी चीज में कामयाब होते हैं तो इंडस्ट्री आपका इस्तेमाल सिर्फ उसी रूप में करना चाहती है लेकिन एक एक्टर को पता होना चाहिए कि ऑडियंस उसे किस रूप में पसंद करेगी, इसलिए अब मैं उससे बाहर निकलने की कोशिश कर रहा हूं।'

महज 8 साल की उम्र में फिल्मि मेकर मनमोहन देसाई की ब्लॉकबस्टर 'धरम-वीर' (1977) में अपने पापा धर्मेन्द्र के बचपन का किरदार निभाने वाले बॉबी देओल ने बतौर लीड एक्टोर 1995 में रिलीज हुई फिल्म 'बरसात' से डेब्यू किया था।

बॉबी ने अपने 28 साल लंबे करियर में लगभग 40 फिल्में की लेकिन इनमें, उनकी सिर्फ 6 फिल्में 'बरसात', 'गुप्त', 'सोल्जर', 'बादल', 'यमला पगला दीवाना' और 'हाउसफुल 4' ही हिट हुई हैं। उनकी 28 फिल्में डिजास्टर रही हैं।

बॉक्स ऑफिस पर बॉबी के स्कोर बोर्ड को देखते हुए उन्हें फिल्मों के ऑफर मिलने बंद हो गए। डिप्रेशन के उस दौर में वह नशे के आदी होने लगे। उन्होंसने शराब का सहारा लेकर न केवल खुद को सबसे दूर कर लिया बल्कि वो खुद से भी दूर होते चले गये। जब कभी होश में होते बस उनके दिमाग को एक ही बात कचोटती थी कि कि आखिर उनमें क्या कमी है जो लोग उनके साथ काम करना नहीं चाहते।

लेकिन जब बॉबी ने वेब सरीज 'आश्रम' के जरिए ओटीटी पर डेब्यूज किया, तब उनके नेगेटिव अवतार की काफी तारीफ हुई। पाखंडी बाबा काशीपुर वाले के किरदार में उन्होंने एक्टिंग की एक नई कहानी लिख दी।

'आश्रम' की बदौलत उन्हें 'एनिमल' (2023) मिली और अचानक उनके लिए सब कुछ बदल गया।

॥ प्रियंका सौरभ
स्तंभकार

क्या सचमुच सिमट रही है दामन की प्रतिष्ठा?

समय की करवटों ने जब फैशन के रेशों को बुना, तब परिधान भी परिवर्तनों की सीढ़ियां चढ़ते चले गए। परंतु क्या इस बदलाव ने 'दामन की प्रतिष्ठा' को भी प्रभावित किया है? क्या आधुनिक वस्त्रों ने पारंपरिक गरिमा को बिसरा दिया, या फिर समाज की दृष्टि अब और व्यापक हो चली है? समय के साथ परिधान और समाज की सोच में बदलाव आया है। पहले 'दामन' केवल वस्त्र का टुकड़ा नहीं, बल्कि मर्यादा और संस्कृति का प्रतीक माना जाता था। क्या हम ये कह सकते है कि जैसे-जैसे दामन छोटा हुआ वैसे-वैसे मर्यादा और संस्कृति भी घटती गई।

पारंपरिक दामनः गरिमा का प्रतीक

'दामन' केवल वस्त्र का टुकड़ा नहीं, यह मर्यादा का आंचल, संस्कृति की पहचान और शालीनता की परिधि रहा है। भारतीय नारी के परिधान–साड़ी, घाघरा, अनारकली और दुपट्टा–न केवल उसके सौंदर्य को संवारते थे, बल्कि उसकी गरिमा और मर्यादा का भी पर्याय बने। पहले '52 गज के दामन' का अर्थ भव्यता, शालीनता और गौरव से लिया जाता था। 'दामन संभालना' मात्र वस्त्रों का सहेजना नहीं, बल्कि अपनी प्रतिष्ठा और चारित्रिक दृढ़ता को बचाए रखना भी था। समाज ने मर्यादा को बाह्य आवरण में समेट दिया, जिससे व्यक्तित्व का आकलन केवल परिधानों से होने लगा।

बदलते परिधान, बदलती परिभाषाएं

समय अपनी गति से प्रवाहमान रहा, और उसके साथ समाज की सोच भी विस्तारित होती चली गई। अब वह समय नहीं, जब गरिमा की परिभाषा केवल कपड़ों की सिलवटों में समेट दी जाती थी। आज महिलाएं अपने आत्मविश्वास की उड़ान को चुन रही हैं–जींस, टॉप, स्कर्ट, फॉर्मल सूट और इंडो-वेस्टर्न परिधानों के साथ। परिधान अब मात्र देह को ढकने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और विचारों की अभिव्यक्ति का स्वरूप बन गए हैं। परंपरा और आधुनिकता के ताने-बाने से एक नया फ्यूजन

जन्म ले चुका है, जो संस्कृति और स्वतंत्रता के बीच संतुलन स्थापित करता है। गरिमा अब वस्त्रों की परिधि में सीमित नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और व्यवहार में प्रतिबिंबित होती है।

क्या आधुनिकता ने दामन की प्रतिष्ठा को धूमिल किया?

यह एक जटिल प्रश्न है, जिसकी गूंज समय और समाज दोनों में सुनी जा सकती है। क्या वस्त्रों का लघु होना संस्कारों का ह्रास है, या फिर मानसिकता का परिष्करण? क्या किसी स्त्री का सम्मान उसके पहनावे तक सीमित रहना चाहिए? क्या उसकी बुद्धिमत्ता, शिक्षा और आत्मनिर्भरता उससे अधिक मूल्यवान नहीं? क्या परिधान की लंबाई उसके विचारों की ऊंचाई से अधिक महत्त्व रखती है? कुछ का मत है कि आधुनिकता ने संस्कृति को धूमिल किया, परंतु अन्य इसे आत्म-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के रूप में देखते हैं। वास्तविकता यह है कि गरिमा बाह्य आवरण में नहीं, बल्कि आचरण और आत्मसम्मान में होती है।

समाज का नजरिया और स्त्रियों की स्वतंत्रता

अब भी कई स्थानों पर परिधानों को लेकर परंपरा की बेड़ियां जकड़ी हुई हैं। 'ऐसे वस्त्र मत पहनो, लोग क्या कहेंगे?' जैसे शब्द आज भी अनगिनत घरों की दीवारों से टकराते हैं। ‍‍ ‍‍'कपड़ों से संस्कार झलकते हैं!'

'लड़की हो, थोड़ा सभ्य कपड़े पहनो!' 'ऐसे खुले विचार नहीं, यह हमारी संस्कृति नहीं!' परंतु क्या परिधान ही संस्कारों की कसौटी है? समाज को इस सोच से आगे बढ़ना होगा कि स्त्रियों की मयार्दा वस्त्रों से नहीं, उनके विचारों से आंकी जानी चाहिए। समय के प्रवाह में समाज ने अनेक रूप बदले हैं, परंतु स्त्रियों की स्वतंत्रता को लेकर उसकी सोच अब भी दो ध्रुवों में बंटी हुई प्रतीत होती है। एक ओर आधुनिकता की लहर उन्हें आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बना रही है, तो दूसरी ओर परंपरा की जड़ें अब भी उनकी उड़ान में अवरोध उत्पन्न करती हैं। सवाल यह उठता है–क्या स्त्री सचमुच स्वतंत्र हुई है, या यह केवल एक भ्रम है?

संस्कृति और स्वतंत्रताः संतुलन आवश्यक है

'दामन की प्रतिष्ठा' अब भी बनी हुई है, बस उसकी परिभाषा ने एक नया रूप धारण कर लिया है। परंपरा हमारी जड़ों से जुड़ी होती है, लेकिन जड़ों को मजबूती देने के लिए शाखाओं का फैलना भी जरूरी है। संस्कृति को आधुनिकता के साथ संतुलित करना आवश्यक है। महिलाओं को अपनी इच्छा से परिधान चुनने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। असली गरिमा पहनावे में नहीं, बल्कि विचारों, कर्मों और आत्म-सम्मान में बसती है। समय की सुइयां कभी पीछे नहीं दौड़तीं। परिधान बदल सकते हैं, परंतु सम्मान और गरिमा की वास्तविक पहचान व्यक्ति के आचरण और आत्मसम्मान में होती है। 'दामन की प्रतिष्ठा' आज भी जीवंत है, बस उसका अस्तित्व अब कपड़ों की सिलवटों में नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और स्वतंत्रता के विस्तृत आकाश में देखा जाता है।

कई बार जब 'दामन की प्रतिष्ठा' पर चर्चा होती है, तो असल में यह संस्कृति और स्वतंत्रता के बीच संतुलन का मामला होता है। परंपराएं समाज की जड़ों से जुड़ी होती हैं, लेकिन उनका बदलते समय के साथ ढलना भी जरूरी है। महिलाओं को यह अधिकार होना चाहिए कि वे जो पहनना चाहें, पहन सकें, बिना किसी सामाजिक दबाव के। गरिमा और मयार्दा पहनावे से ज्यादा व्यक्ति के व्यवहार, सोच और कृत्यों में झलकती है। संस्कृति और आधुनिकता में संतुलन बनाए रखना सबसे अच्छा समाधान है। फैशन और पहनावा बदल सकते हैं, लेकिन सम्मान और गरिमा व्यक्ति की सोच और कर्मों से आती है। 'दामन की प्रतिष्ठा' आज भी बनी हुई है, बस उसकी परिभाषा बदल गई है -यह अब सिर्फ कपड़ों में नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और आत्म-सम्मान में दिखती है।

‘ग़ज़लकार डी एम मिश्र : सृजन के समकालीन सरोकार’ का लोकार्पण

‘पतहर’ पत्रिका के तत्वाधान में नागरी प्रचारिणी सभा के तुलसी सभागार में विभूति नारायण ओझा की संपादित आलोचनात्मक पुस्तक ‘ग़ज़लकार डी एम मिश्र : सृजन के समकालीन सरोकार’ का लोकार्पण सहपरिचर्चा एवं काव्य पाठ का आयोजन देवरिया में हुआ।

कार्यक्रम को विशिष्ट अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार, कवि, विचारक, संपादक कौशल किशोर ने कहा कि डी एम मिश्र समकालीन ग़ज़लकार हैं। इनकी ग़ज़लें हिंदी की कविता की तरह समकाल से मुठभेड़ करती हैं। इनमें जीवन का एहसास है। गांव की मिट्टी और आबोहवा है। समाज का द्वन्द्व है। सत्ता और व्यवस्था से टकराती हैं। यदि प्रेम और करुणा है, तो वहीं प्रतिरोध और अन्याय का प्रतिकार है। इनके यहां जो प्रतिरोध है, वह विरोध के आगे की चीज़ है। इनकी समझ है कि यदि अन्याय का प्रतिकार नहीं हुआ तो अत्याचारियों का मनोबल बढ़ेगा।

कौशल किशोर ने डीएम मिश्र की अनेक ग़ज़लों को उद्धृत करते हुए कहा कि दुष्यंत कुमार और अदम गोंडवी की परंपरा में इनकी ग़ज़लों को देखा जा सकता है । जहां व्यवस्था की विद्रूपताओं का उद्घाटन है, वहीं लोक जीवन के ख़ूबसूरत बिम्ब और श्रम का सौंदर्य है । ये बदलाव की उम्मीद नहीं छोड़ती हैं।

मुख्य अतिथि नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती अलका सिंह ने कहा कि डी एम मिश्र की ग़ज़लों में पूरी दुनिया समाहित है। उनकी रचनाएं समाज को नई रौशनी देती हैं।

समारोह में बीज वक्तव्य देते हुए डॉ चतुरानन ओझा ने कहा कि डी

एम मिश्र का सरोकार मेहनत और पसीने वालों से है। इनकी रचनाएं सत्ता के गलियारों में आशिकी के नग़मे गाने और सुनने वालों के लिए किसी काम की नहीं है। संवादधर्मिता इसका ख़ास गुण है। अंदाज़ बतियाने का है, कहने का है। यह सीधे लोगों तक पहुंचती है। ग़ज़लों के लिए किसी आलोचक या व्याख्याकार की ज़रूरत नहीं है । जिस तरह दुष्यंत और अदम की ग़ज़लें ज़बान पर चढ़ जाती है, मिश्र जी की ग़ज़लों में भी यही ख़ासियत है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए साहित्यकार अचल पुलस्तेय ने कहा कि डी एम मिश्र ग्रामीण जीवन के हालात को लेकर ग़ज़लें लिखी हैं, वे जनवादी कवि है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार इंद्र कुमार दीक्षित ने कहा कि डी एम मिश्र की ग़ज़लें आम बोलचाल की भाषा में लिखी गई हैं, जो ग़ज़लों में नज़ाकत व नफ़ासत की उम्मीद करते हैं वे निराश होंगे। इनकी ग़ज़लें हिन्दी की दुनिया में तेज़ी से लोकप्रियता पा रही हैं। वे मिट्टी की महक की बात ग़ज़लों में करते हैं। वे श्रम में सौंदर्य की तलाश करने वाले ग़ज़लकार हैं।

डी एम मिश्र ने 'पतहर' और इसके संपादक विभूति नारायण ओझा और उनकी टीम के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मौजूदा दौर ऐसा है, जहां हर अच्छी चीज़ को गंदला किया जा रहा है। ऐसे में झूठ को बेनक़ाब करना, अन्याय का विरोध और सच के पक्ष में खड़ा होना ज़रूरी है। इस मौक़े पर उन्होंने कई ग़ज़लें सुनाईं। एक ग़ज़ल में वह कहते हैं- 'फूल तोड़े गये टहनियां चुप रहीं, पेड़ काटा गया बस इसी बात पर।'

कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत चक्रपाणि ओझा ने किया। संचालन कवि सरोज पांडे एवं आभार ज्ञापन विभूति नारायण ओझा ने किया। इसके पूर्व विशिष्ट अतिथि डॉ डी एम मिश्र को 'मान पत्र' देकर नगर पालिका अध्यक्ष और संपादक विभूति नारायण ओझा ने सम्मानित किया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से किसान नेता शिवाजी राय, सुभाष राय, सर्वेश्वर ओझा, सौरभ मिश्रा, राम प्रकाश सिंह, सत्येंद्र यादव, विकास दुबे, कृष्णानंद पांडेय, सत्य प्रकाश सिंह, संतोष, डॉक्टर आलोक पांडेय, नित्यानंद त्रिपाठी, रानू पांडे, करन त्रिपाठी , सोनू सुजीत, विकास तिवारी, रमेश कुमार, क्रांति कुमार, राकेश कुमार एवं प्रभानंद तिवारी आदि मौजूद थे।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में उपस्थित कवियों में कौशल किशोर मणि, योगेंद्र पांडेय,दयाशंकर कुशवाहा, प्रेम कुमार मुफलिस, सौदागर सिंह, अंजलि अरोड़ा, सरोज कुमार पांडेय, इंद्र कुमार दीक्षित, क्षमा श्रीवास्तव, विकास तिवारी, योगेंद्र तिवारी योगी आदि ने अपनी कविताओं का पाठ भी किया।

कहानी विधा के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित

स्वयं प्रकाश स्मृति सम्मान

'स्वयं प्रकाश न्यास' ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्वयं प्रकाश की स्मृति में दिए जाने वाले वार्षिक सम्मान के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित की हैं। न्यास की जारी विज्ञप्ति के अनुसार यह सम्मान कहानी विधा की किसी ऐसी कृति को दिया जाएगा, जो सम्मान के वर्ष से अधिकतम छह वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई हो। वर्ष 2025 के सम्मान के लिए 1 जनवरी, 2021 से 31 दिसंबर, 2024 के मध्य प्रकाशित कहानी संग्रहों पर विचार किया जाएगा। मुख्यतः चार विधाओं के लिए दिया जाने वाला यह सम्मान इस वर्ष कहानी विधा के लिए है। और कहानीकार की आयु सीमा 50 वर्ष रखी गई है।

सम्मान के लिए तीन निर्णायकों की एक समिति बनाई गई है, जो प्राप्त प्रस्तावों पर विचार कर किसी एक कृति का चुनाव करेगी। सम्मान में ग्यारह हजार रुपये, प्रशस्ति पत्र और शॉल भेंट किए जाएंगे।

न्यास की जारी विज्ञप्ति के मुताबिक मूलतः राजस्थान के अजमेर निवासी स्वयं प्रकाश हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में मौलिक योगदान के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने ढाई सौ के आसपास कहानियां लिखीं और उनके पांच उपन्यास भी प्रकाशित हुए थे। इनके अतिरिक्त नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध और बाल साहित्य में भी अपने अवदान के लिए स्वयं प्रकाश को हिंदी संसार में जाना जाता है। उन्हें भारत सरकार की साहित्य अकादेमी सहित देश भर की विभिन्न अकादमियों और संस्थाओं से अनेक पुरस्कार और सम्मान मिले थे। उनके लेखन पर अनेक विश्वविद्यालयों में शोध कार्य हुआ है तथा उनके साहित्य के मूल्यांकन की दृष्टि से अनेक पत्रिकाओं ने विशेषांक भी प्रकाशित किए हैं। 20 जनवरी 1947 को जन्मे स्वयं प्रकाश का निधन कैंसर के कारण 7 दिसम्बर, 2019 को हो गया था।

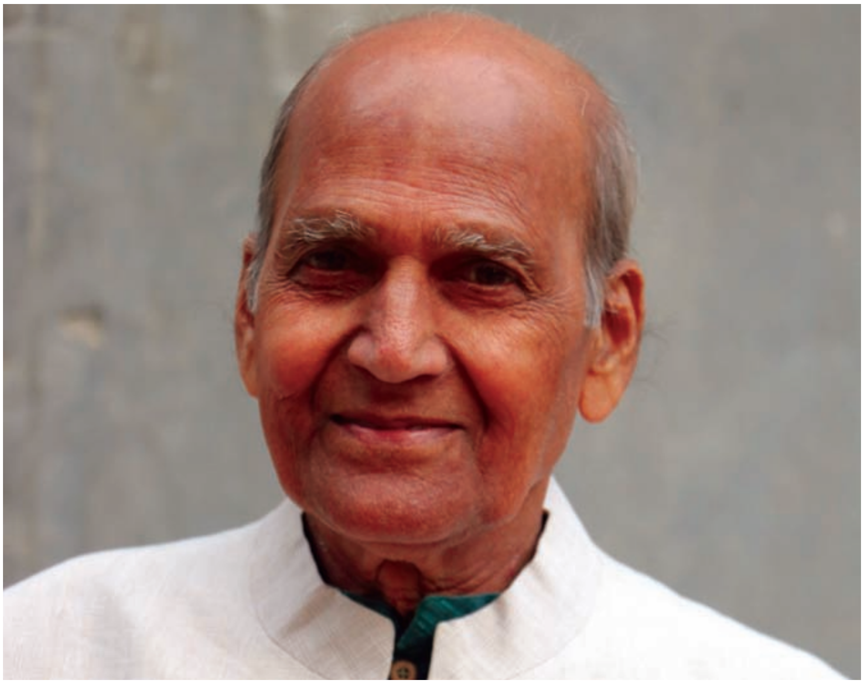

बनास जन के सम्पादक और युवा आलोचक डॉ पल्लव को स्वयं प्रकाश स्मृति सम्मान का संयोजक बनाया गया है। वे इस सम्मान से संबंधित समस्त कार्यवाही का संयोजन करेंगे। सम्मान के लिए प्रविष्टियां डॉ पल्लव को 15 अगस्त, 2025 तक बनास जन के पते (393, डीडीए, ब्लॉक सी एंड डी, शालीमार बाग, दिल्ली - 110088) पर भिजवाई जा सकेगी। साहित्य और लोकतान्त्रिक विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए गठित स्वयं प्रकाश स्मृति न्यास में कवि राजेश जोशी (भोपाल), आलोचक दुर्गाप्रसाद अग्रवाल (जयपुर). कवि-आलोचक आशीष त्रिपाठी (बनारस), आलोचक पल्लव (दिल्ली), इंजी. अंकिता सावंत (मुंबई) और अपूर्वा माथुर (दिल्ली) सदस्य हैं।

‘दूसरा मत’ प्रकाशन

‘आमने-सामने’ अपने-आप में एक ऐतिहासिक इंटरव्यू-संग्रह है। इस संग्रह में देश की 62 अहम शख़्सियतों एवं हस्तियों के साक्षात्कार शामिल हैं। यह संग्रह देश ही नहीं विदेशों में भी ख़ासा चर्चित रहा है।

देश के जाने-माने प्रकाशन ‘राजपाल’ के प्रकाशक एवं डीएवी मैनेजमेंट कमिटी के वायस प्रेसिडेंट विश्वनाथ जी ने अपने पत्र में स्पष्ट लिखा है,- “इस तरह के विशाल इंटरयू-संग्रह देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अभी तक नहीं आए हैं।

आमने-सामने (मूल्य 750/)

‘सामना’ भी एक महत्वपूर्ण इंटरव्यू-संग्रह के तौर पर ‘आमने-सामने’ की तरह सामने आया है। इसे भी शख़्सियतों एवं साक्षात्कार की कला को क़ुबुल करने वाले लोगों ने हाथों-हाथ लिया है। इस संग्रह में देश की विभिन्न क्षेत्रों की 82 हस्तियों की इंटरव्यू की शक्ल में लेखा-जोखा एवं उनकी हस्ती की पड़ताल है।

अपने-अपने क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होने वाले और देश व दुनिया के सामने अपना लोहा मनवाने वाले लोगों के एक समूह विशेष इस अंक में शामिल हैं।

सामना (मूल्य 1100/)

ग्लोबल ऑब्ज़र्वर

मतलब निर्भीक और निष्पक्ष

इस छोर से उस छोर तक

RNI NO. DELHIN/2016/71079

बिहार के सभी ज़िलों के सभी अनुमंडलों एवं प्रखंडों से ब्यूरोचीफ़, स्पेशल कॉरोसपोंडेंट एवं संवाददाता पद पर ग्लोबल ऑब्ज़र्वर से जुड़ने के लिए अपना आवेदन एवं बायोडाटा:-

Email:globalobserverindia@gmail.com पर भेजें

ग्लोबल ऑब्जर्वर

+91-9643709089

संपादकीय

मुलायम का 'अमर' समाजवाद

बहती रहे गंगा-जमनी धारा

ग्लोबल ऑब्जर्वर का विमोचन

ग्लोबल ऑब्जर्वर

+91-9643709089

संपादकीय